अथ चतुःसप्ततितमोऽध्यायः

हनुमत् मन्त्र का वर्णन

सनत्कुमार उवाच

अथोच्यन्ते हनुमतो मन्त्राः सर्वेष्टदायकाः। यान्समाराध्य विप्रेन्द्र तत्तुल्याचरणा नराः॥१॥

मनुः स्वरेन्दुसंयुक्तं गगनं च भगान्विताः।
हसफाग्निनिशाधीशाः द्वितीयं बीजमीरितम्॥२॥
स्वफाग्नयो भगेन्द्वाढ्यास्तृतीयं बीजमीरितम्।
वियद्भृग्वग्निमन्विदुयुक्तं स्याच्च चतुर्थकम्॥३॥
पञ्चमं भगचन्द्राढ्यावियद्भृगुस्वकाग्नयः।
मन्विन्द्वाढ्यौ हसौ षष्ठं ङेन्तः स्याद्धनुमांस्ततः॥४॥

हृदयान्तो महामन्त्रराजोऽयं द्वादशाक्षरः। रामचन्द्रो मुनिश्चास्य जगतीछन्द ईरितम्॥५॥
देवता हनुमान्बीजं षष्ठं शक्तिद्वितीयकम्। षड्बीजैश्च षडङ्गानि शिरोभाले दृशोर्मुखे॥६॥
गलबाहुद्वये चैव हृदि कुक्षौ च नाभितः। ध्वजे जानुद्वये पादद्वये वर्णान्क्रमान्न्यसेत्॥७॥

षड्बीजानि पदद्वन्द्वं मूर्ध्नि भाले मुखे हृदि।
नाभावूर्वोजङ्घयोश्च पादयोर्विन्यसेत्क्रमात्॥८॥

देवर्षि सनत्कुमार कहते हैं—हे विप्रेन्द्र! अब मैं सर्व इष्टदायक हनुमत् मन्त्र कहता हूं। इन मन्त्राराधन से साधक हनुमत्तुल्य हो जाता है। औ, अनुस्वार तथा ह से युक्त **प्रथम बीज** है हौं। ह् स् फ् र् + अनुस्वार + ए = हस्फ्रें० यह **द्वितीय बीज** है।

ख् फ् र् तथा 'ए' जब अनुस्वार युक्त हों = ख्फ्रें **तृतीय बीज** है। वियत् (ह) + स + र + और तथा अनुस्वार = हस्रौं **चतुर्थ बीज** है।

पंचम बीज है—ए + हं +स् + ख् + फ् + र = हस्ख्फ्रें (हस्ख्फ्रें) उच्चारण होगा।

ह + अनुस्वारयुक्त स + और = हसौं **षष्ठबीज** है। तदनन्तर हौं हस्फ्रें ख्फ्रें हस्रौं ह्स्ख्फ्रें हसौं हनुमते नमः। यह **द्वादशाक्षर महामन्त्रराज** है। इनके नारायण ऋषि हैं। छन्दः है जगती, देवता हैं हनुमान्। हसौं बीज है। हस्फ्रें शक्ति है। षड्बीजों से षडङ्ग न्यासोपरान्त शिर, ललाट, नेत्र, मुख, ग्रीवा, बाहु, हृदय, उदर, नाभि, लिङ्ग, जानु तथा चरणों से वर्णों का न्यास करे। तदनन्तर पुनः षड्बीज द्वारा क्रमशः दो पद का न्यास मस्तक, भाल, मुख, हृदय, नाभि, उरु, जंघा तथा चरण में करे।।१-८।।

अञ्जनीगर्भसम्भूतं ततो ध्यायेत्कपीश्वरम्। उद्यत्कोट्यर्कसङ्काशं जगत्प्रक्षोभकारकम्॥९॥

श्रीरामाङ्घ्रिध्याननिष्ठं सुग्रीवप्रमुखार्चितम्।
वित्रासयन्तं नादेन राक्षसान्मारुतिं भजेत्॥१०॥

अब अंजनी के गर्भ से उत्पन्न हनुमान का ध्यान करना चाहिये—वे उदित हो रहे कोटि सूर्य के समान हैं। वे जगत् को प्रक्षुब्ध करने वाले, श्रीराम के चरणों के ध्यान में निरत सुग्रीवादि से अर्चित, अपने निनाद द्वारा राक्षसों को त्रस्त करने वाले हैं। मैं ऐसे मारुति का भजन करता हूं।।९-१०।।

ध्यात्वैवं प्रजपेद्भानुसहस्रं विजितेन्द्रियः।
दशांशं जुहुयाद्व्रीहीन्पयोदध्याज्यमिश्रितान्॥११॥
पूर्वोक्ते वैष्णवे पीठे मूर्त्तिं सङ्कल्प्य मूलतः।
आवाह्य तत्र सम्पूज्य पाद्यादिभिरुपायनैः॥१२॥

तत्पश्चात् उक्त मन्त्र में से किसी मन्त्र का १२००० जप करके १२०० होम दुग्ध, दधि तथा घृत को मिलाकर धान्य से युक्त करके करे। तदनन्तर वैष्णव पीठ पर मूलमन्त्र से मूर्त्ति संकल्प (प्रतिष्ठा) करनी चाहिये। उस मूर्त्ति में हनुमत् का आवाहन करके पाद्यादि उपचारों द्वारा उनका पूजन करे।।११-१२।।

केशरेष्वङ्गपूजा स्यात्पत्रेषु च ततोऽर्चयेत्।
रामभक्तो महातेजाः कपिराजो महाबलः॥१३॥
द्रोणाद्रिहारको मेरुपीठकार्चनकारकः। दक्षिणाशाभास्करश्च सर्वविघ्नविनाशकः॥१४॥
इत्थं सम्पूज्य नामानि दलाग्रेषु ततोऽर्चयेत्। सुग्रीवमङ्गदं नीलं जाम्बवन्तं नलं तथा॥१५॥
सुषेणं द्विविदं मैन्दं लोकपालस्ततोऽर्चयेत्।
वज्राद्यानपि सम्पूज्य सिद्धश्चैवं मनुर्भवेत्॥१६॥

केसरों पर अंगदेवगण का पूजन करने के पश्चात् पत्रों पर रामभक्त, महातेजस्वी, कपिराज, महाबली, द्रोणपर्वतहारी, मेरुपीठपूजक, दक्षिण दिशाभास्कर, सर्वविघ्ननाशक नामों से क्रमशः पूजा करे। तदनन्तर पत्राग्र पर सुग्रीव, अंगद, नील, जामवन्त, नल, सुषेण, द्विविद, मैन्द तथा लोकपालगण की अर्चना करनी चाहिये। तत्पश्चात् आयुधों की पूजा सम्पन्न करके साधक मन्त्रसिद्ध हो जाता है।।१३-१६।।

मन्त्रं नवशतं रात्रौ जपेद्दशदिनावधि। यो नरस्तस्य नश्यन्ति राजशत्रूत्थभीतयः॥१७॥
मातुलिङ्गाम्रकदलीफलैर्हुत्वा सहस्रकम्। द्वाविंशतिब्रह्मचारि विप्रान्सम्भोजयेच्छुचीन्॥१८॥
एवंकृते भूतविषग्रहरोगाद्युपद्रवाः। नश्यन्ति तत्क्षणादेव विद्वेषिग्रहदानवाः॥१९॥

दस दिन तक साधक रात्रि में नित्य ९०० बार इस मन्त्र को जपे। उस साधक को राजा तथा शत्रुजनित भय नहीं होता। मातुलुंग नीबू, आम तथा कदली से १००० होम के उपरान्त २२ ब्रह्मचारी ब्राह्मण को भोजन कराये। इससे भूत, विष, ग्रह, रोग, शत्रु तथा दानवजनित उपद्रवों का नाश होता है। तदनन्तर तत्क्षण देव विद्वेषी सभी ग्रह, दानव नष्ट हो जाते हैं।।१७-१९।।

अष्टोत्तरशतेनाम्बु मन्त्रितं विषनाशनम्। भूतापस्मारकृत्योत्थं ज्वरे तन्मन्त्रमन्त्रितैः॥२०॥
भस्मभिः सलिलैर्वापि ताडयेज्ज्वरिणं क्रुधा।
त्रिदिनाज्ज्वरमुक्तोऽसौ सुखं च लभते नरः॥२१॥

इस मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित जल विष नाशक होता है। जिसे भूत, अपस्मार अथवा ज्वर प्रकोप होता हो, वह इस मन्त्राभिमन्त्रित जल किंवा अभिमंत्रित भस्म से क्रोधित होकर ज्वर का ताड़न करे (रोगी पर फेंके)। तीन दिन में ही वह रोगी ज्वरमुक्त होकर सुखानुभव करेगा।।२०-२१।।

औषधं वा जलं वापि भुक्त्वा तन्मन्त्रमन्त्रितम्।
सर्वान्रोगान्पराभूय सुखी भवति तत्क्षणात्।।२२।।
तज्जप्तभस्मलिप्ताङ्गो भुक्त्वा तन्मन्त्रितं पयः।
योद्धुं गच्छेच्च यो मन्त्री शस्त्रसङ्घैर्न बाध्यते।।२३।।
शस्त्रक्षतं व्रणस्फोटो लूतास्फोटोऽपि भस्मना।
त्रिर्जप्तेन च संस्पृष्टाःशुष्यन्त्येव न संशयः।।२४।।

इस मन्त्र से अभिमंत्रित जल अथवा औषधि का पान करने वाला व्यक्ति समस्त रोगों पर विजय पाकर तत्क्षण प्रसन्न हो जाता है। इस मन्त्र से मंत्रित भस्म का अंगों पर लेप करे तथा अभिमंत्रित जल का पान करे। तब युद्ध में जाने पर भी उस पर शस्त्र प्रहार व्यर्थ होगा। इस मन्त्र से भस्म को तीन बार अभिमंत्रित करके शस्त्रों से हुये व्रण घाव पर, व्रण स्फोट किंवा लूता स्फोट पर लगाये। घाव शीघ्र भर जायेंगे।।२२-२४।।

जपेदर्कास्तमारभ्य यादवर्कोदयो भवेत्।
मन्त्रं सप्तदिनं यावच्चादाय भस्मकीलकौ।।२५।।
निखनेदभिमन्त्र्याशु शत्रूणां द्वार्यलक्षितः।
विद्वेषं मिथ आपन्नाः पलायन्तेऽरयोऽचिरात्।।२६।।
भस्माम्बु चन्दनं मन्त्री मन्त्रेणानेन मन्त्रितम्।
भक्ष्यादियोजितं यस्मै ददाति स तु दासवत्।।२७।।
क्रूराश्च जन्तवोऽप्येवं भवन्ति वशवर्तिनः। गृहीत्वेशानदिक्संस्थं करञ्जतरुमूलकम्।।२८।।
कृत्वा तेनाङ्गुष्ठमात्रां प्रतिमां च हनूमतः। कृत्वा प्राणप्रतिष्ठां च सिन्दूराद्यैः प्रपूज्य च।।२९।।
गृहस्याभिमुखीं द्वारे निखनेन्मन्त्रमुच्चरन्। ग्रहाभिचाररोगाग्निविषचौरनृपोद्भवाः।।३०।।
न जायन्ते गृहे तस्मिन् कदाचिदप्युपद्रवाः। तद्गृहं धनपुत्राद्यैरेधते प्रत्यहं चिरम्।।३१।।
निशि यत्र वने भस्म मृत्स्नया वापि यत्नतः।
शत्रोः प्रतिकृतिं कृत्वा हृदि नाम समालिखेत्।।३२।।
कृत्वा प्राणप्रतिष्ठान्तं भिन्द्याच्छस्त्रैर्मनुं जपन्।
मन्त्रान्ते प्रोच्चरेच्छत्रोर्नाम छिन्धि च भिन्धि च।।३३।।
मारयेति च तस्यान्ते दन्तैरोष्ठं निपीड्य च।
पाण्योस्तले प्रपीड्याथ त्यक्त्वा तं स्वगृहं व्रजेत्।।३४।।

सात दिन पर्यन्त सूर्यास्त से लगाकर सूर्योदय तक मन्त्र जप करके भस्म तथा कील को अभिमंत्रित

करे। उसे गोपनीयता के साथ शत्रु के द्वार पर गाड़े। वह शत्रु अब अपने ही लोगों से द्वेष करेगा तथा वहां से शीघ्र पलायन करेगा। मन्त्राभिमंत्रित जल, भस्म तथा चन्दन जिसे भोजन में मिलाकर प्रदान किया जायेगा, वह व्यक्ति साधक का दासवत् हो जायेगा। हिंसक जन्तु भी साधक के वश में इस विधि से हो जाते हैं। ईशान कोणस्थ करंज वृक्ष के जड़ को लाये तथा उसकी अंगूठे के नाप की हनुमत् मूर्त्ति बनवाये। तदनन्तर उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करके उस मूर्त्ति का पूजन सिन्दूर प्रभृति से करना चाहिये। तदनन्तर उसे घर के सम्मुख वाले द्वार पर मन्त्रोच्चार सहित गाड़े। उस गृह में अब ग्रह, अभिचार, रोग, अग्नि, विष, चोर, राज्य प्रभृति का भय नहीं होगा। रात्रिकाल में वन में जाकर भस्म या उत्तम मृत्तिका से शत्रु प्रतिमा बनाये। उसके हृदय पर शत्रु नाम अंकित करे। तदनन्तर उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करके हनुमत् मन्त्र जप सहित उसे शस्त्र से काटे। मन्त्रान्त में शत्रु का नाम लेकर कहे "अमुक नामानं शत्रुं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि मारय मारय।" तदनन्तर उस प्रतिमा के ओंठ में अपने दांत से काटे तथा प्रतिमा पर हथेली मारे और स्वगृह वापस आये।।२५-३४।।

कुर्वन्सप्तदिनं चैवं हन्याच्छत्रुं न संशयः। राजिकालवणैर्मुक्तचिकुरः पितृकानने।।३५।।
धत्तूरफलपुष्पैश्च नखरोमविषैरपि।
द्विक (काक) कौशिकगृध्राणां पक्षैः श्लेष्मान्तकाक्षजैः।।३६।।
समिद्भिस्त्रिशतं याम्यदिङ्मुखो जुहुयान्निशि। एवं सप्तदिनं कुर्वन्मारयेदुद्धतं रिपुम्।।३७।।

सात दिन तक यह प्रक्रिया करने से शत्रु मृत होगा। यह निःसंदिग्ध है। रात्रिकाल में साधक श्मशान जाये। वहां अपने बाल बिखेरे। वह पीली सरसों, लवण, धतूरा का फल तथा पुष्प, नख, रोम, विष, काक-उलूक-गृद्ध के पंख, लसोड़ा एवं बहेड़ा काष्ठ द्वारा दक्षिण की ओर मुख करके होम करे। सात दिन यह करने से बली तथा उद्धत शत्रु भी मृत होगा।।३५-३७।।

वित्रासस्त्रिदिनं रात्रौ श्मशाने षड्शतं जपेत्।
ततो वेताल उत्थाय वदेद्भावि शुभाशुभम्।।३८।।

मात्र तीन दिन ऐसा करने से शत्रु को महाभय होगा। रात्रि में श्मशान में हनुमान का मन्त्र ६०० जपे। वेताल उसका दास होकर शुभ-अशुभ फल भी बतला देगा।।३८।।

किङ्करीभूय वर्त्तेत कुरुते साधकोदितम्। भस्माम्बुमन्त्रितं रात्रौ सहस्रावृत्तिकं पुनः।।३९।।
दिनत्रयं च तत्पश्चात्प्रक्षिपेत्प्रतिमासु च।
यासु कासु च स्थूलासु लघुष्वपि विशेषतः।।४०।।
मन्त्रप्रभावाच्चलनं भवत्येव न संशयः। अष्टम्यां वा चतुर्दश्यां कुजे वा रविवासरे।।४१।।
हनुमत्प्रतिमां पट्टे माषैः स्नेहपरिप्लुतैः। कुर्याद्रम्यां विशुद्धात्मा सर्वलक्षणलक्षिताम्।।४२।।

वह साधक का दास हो जाता है। रात्रि में भस्म एवं जल एक हजार बार मंत्रित करे। ऐसा तीन दिन तक करे। फिर किसी भी प्रतिमा पर भले ही वह स्थूल किंवा लघु क्यों न हो तनिक छिड़के। वह प्रतिमा मन्त्रप्रभाव से चलित हो जाती है। यहां संशय न करे। अष्टमी अथवा चतुर्दशी के दिन जब मंगल अथवा रविवार हो, तब शुद्धमन वाला साधक एक पटरे पर उर्द से हनुमान की सर्वलक्षणान्वित कमनीय मूर्त्ति निर्माण करे।।३९-४२।।

तैलदीपं वामभागे घृतदीपं तु दक्षिणे। संस्थाप्यावाहयेत्पश्चान्मूलमन्त्रेण मन्त्रवित्॥४३॥
प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा च पाद्यादीनि समर्पयेत्। रक्तचन्दनपुष्पैश्च सिन्दूराद्यैः समर्पयेत्॥४४॥
धूपं दीपं प्रदायाथ नैवेद्यं च समर्पयेत्। अपूपमोदनं शाकमोदकान्वटकादिकम्॥४५॥

साज्यं च तत्समप्यार्थ मूलमन्त्रेण मन्त्रवित्।
अखण्डितान्यहिलतादलानि सप्तविंशतिम्॥४६॥

त्रिधा कृत्वा सपूगानि मूलेनैव समर्पयेत्। एवं सम्पूज्य मन्त्रज्ञो जपेद्दशशतं मनुम्॥४७॥

कर्पूरारार्तिकं कृत्वा स्तुत्वा च बहुधा सुधीः।
निजेप्सितं निवेद्याथ विधिवद्विसृजेत्ततः॥४८॥
नैवेद्यान्नेन सम्भोज्य ब्राह्मणान्सप्तसंख्यया।
निवेदितानि पर्णानि तेभ्यो दद्याद्विभज्य च॥४९॥
दक्षिणां च यथा शक्तिं दत्त्वा तान् विसृजेत्सुधीः।
तत इष्टगणैः सार्द्धं स्वयं भुञ्जीत वाग्यतः॥५०॥

उस मूर्त्ति के बायीं ओर तैल दीप जलाये। दायीं ओर घृत दीप प्रज्वलित करे। तब साधक मूलमन्त्र से उस प्रतिमा को प्रतिष्ठित करके उसमें हनुमत् आवाहन करे। तदनन्तर प्राण-प्रतिष्ठा कार्य के उपरान्त पाद्य, रक्त चन्दन, पुष्प, सिन्दूर, धूप, दीप, नैवेद्यार्पण करे। भगवान् के समक्ष पूरी, भात, शाक, दही बड़ा, घृत, मिष्ठान्नादि निवेदित करके २७ चौघड़े पान तथा सुपारी मूलमन्त्र से ही भगवान् हनुमान् को अर्पित करे। तदनन्तर एक सहस्र मन्त्र जप, कर्पूर से आरती करे। अनेक स्तुतिगान करे। अपनी प्रियवस्तु हनुमत् देव को अर्पित करे। तदनन्तर सात श्रेष्ठ ब्राह्मणों को नैवेद्यान्न अर्पित करके उक्त निवेदित पान का चौघड़ा तथा सुपाड़ी देकर तथा यथाशक्ति दक्षिणा देकर ब्राह्मणों को विदा करे। तदनन्तर बन्धु-बान्धवों के साथ साधक मौनी रहकर भोजन ग्रहण करे।।४३-५०।।

तद्दिने भूमिशय्यां च ब्रह्मचर्य्यं समाचरेत्।
एवं यः कुरुते मर्त्यः सोऽचिरादेव निश्चितम्॥५१॥
प्राप्नुयात्सकलान्कामान्कपीशस्य प्रसादतः।
हनुमत्प्रतिमां भूमौ विलिखेत्तत्पुरो मनुम्॥५२॥

साध्यनाम द्वितीयान्तं विमोचय विमोचय। तत्पूर्वं मार्जयद्वामपाणिनाथ पुनर्लिखेत्।

एवमष्टोत्तरशतं लिखित्वा मार्जयेत्पुनः॥५३॥
एवं कृते महाकारागृहाच्छीघ्रं विमुच्यते।
एवमन्यानि कर्माणि कुर्य्यात्पल्लवमुल्लिखन्॥५४॥

साधक उस दिन भूमि पर शयन करे तथा ब्रह्मचारी रहे। जो साधक इस विधि से पूजन करता है, वह हनुमत् कृपा से अपनी अभीप्सित कामनाओं को कपीश हनुमान की कृपा से प्राप्त कर लेता है। पृथिवी पर (शुद्ध

स्थान में) हनुमत् प्रतिमा अंकित करके उनके आगे मन्त्रांकन करे। तब जिसके लिये यह अनुष्ठान किया जा रहा हो, उस साध्य का नाम लिखकर ''विमोचय विमोचय'' लिखे। तदनन्तर बायीं हथेली से सब मिटाये। ऐसी प्रक्रिया (लेखनादि) १०८ बार करे तथा मिटायें। इससे साध्य कारागार से मुक्त हो जाता है। एवंविध पल्लवों पर लिखकर अन्य कर्म करे।।५१-५४।।

सर्षपैर्वश्यकृद्धोमो विद्वेषे हयमारजैः। कुङ्कुमैरिध्मकाष्ठैर्वा मरीचैर्जीर कैरपि।।५५।।
ज्वरे दूर्वागुडूचीभिर्दध्ना क्षीरेण वा घृतैः। शूले करञ्जवातारिसमिद्भिस्तैललोलितैः।।५६।।
तैलाक्ताभिश्च निर्गुण्डीसमिद्भिर्वा प्रयत्नतः।
सौभाग्ये चन्दनैश्चेन्द्रलोचनैर्वा लवङ्गकैः।।५७।।
सुगन्धपुष्पैर्वस्त्राप्त्यै तत्तद्धान्यैस्तदाप्तये। रिपुपादरजोभिश्च राजीलवणमिश्रितैः।।५८।।
होमयेत्सप्तरात्रं च रिपुर्याति यमालयम्। धान्यैः सम्प्राप्यते धान्यमन्नैरन्नसमुच्छ्रयः।।५९।।
तिलाज्यक्षीरमधुभिर्महिषीगोसमृद्धये। किं बहूक्तैर्विषे व्याधौ शान्तौ मोहे च मारणे।।६०।।

सर्षप से होम द्वारा वशीकरण, कनेर-कुंकुम-मरीच तथा जीरे के काष्ठ से होम द्वारा शत्रु में विद्वेषण, दूर्वा-गुरुच-दुग्ध-दधि-घृताहुति से ज्वर नाश, तैलसिक्त करंज, रेड़, निगुण्डी काष्ठ से हवन द्वारा शूल रोग नाश होता है। सौभाग्यलाभार्थ चन्दन, इन्द्रलोचन, लवंग से हवन करे। गंधयुक्त पुष्प से होम करने वाला वस्त्रलाभ करेगा। जो अन्न पाना हो, उसी अन्न से होम करे। शत्रु के पैर की धूल में पीली सरसों तथा लवण मिलाकर होम करे। शत्रु यमलोक गमन करेगा। धान्य होम द्वारा धान्यवृद्धि, अन्न होम से अन्न वृद्धि होगी। तिल, घृत, दुग्ध, मधु से होम करने वाले के यहां महिष एवं गौ की समृद्धि होती है। किम्बहुना, व्याधि, मोह तथा मारण में यही मन्त्र जपे।।५५-६०।।

विवादे स्तम्भने द्यूते भूतभीतौ च सङ्कटे। वश्ये युद्धे क्षते दिव्ये बन्धमोक्षे महावने।।६१।।
साधितोऽयं नृणां दद्यान्मन्त्रः श्रेयः सुनिश्चितम्।
वक्ष्येऽथ हनुमद्यन्त्रं सर्वसिद्धिप्रदायकम्।।६२।।

विवाद, स्तम्भन, द्यूतक्रीड़ा, भूतभय, संकट, वशीकरण, युद्ध, घाव, बन्धन मुक्ति तथा महावन में संकट होने पर इसी मन्त्र का जप व्यक्ति करे। उसका श्रेयः होना सुनिश्चित है। अब मैं सर्वसिद्धिदायक हनुमद् यन्त्र कहता हूं।।६१-६२।।

लाङ्गूलाकारसंयुक्तं वलयत्रितयं लिखेत्।
साध्यनाम लिखेन्मध्ये पाशिबीजप्रवेष्टितम्।।६३।।
उपर्यष्टच्छदं कृत्वा पत्रेषु कवचं लिखेत्। तद्बहिर्दन्तमालिख्य तद्बहिश्चतुरस्त्रकम्।।६४।।
चतुरस्त्रस्य रेखाग्रे त्रिशूलानि समालिखेत्। सौं बीजं भूपुरस्याष्टवज्रेषु विलिखेत्ततः।।६५।।
कोणेष्वकुंशमालिख्य मालामन्त्रेण वेष्टयेत्। तत्सर्वं वेष्टयेद्यन्त्रे वलयत्रितयेन च।।६६।।

लांगूलाकार तीन वलय लिखे। उसके मध्य में साध्य नाम अंकित करके वह पाशबीज से वेष्टित करे।

उसके ऊपर अष्टदल कमल लिखकर पत्रों पर कवच अंकित करे। (हुं कवच बीज है)। उसके बाहर दन्त बनाकर उसके बाहर चतुरस्र बनाये। चतुरस्र के आगे त्रिशूल बनाये। भूपुरस्थ चार कोणों के चार वज्रों पर 'सौं' बीज लिखे। कोणों में अंकुश बीज (क्रों) लिखकर इसे जपमन्त्र (मालामन्त्र) से घेरे। अब सम्पूर्ण यन्त्र को वलयाकृति त्रिरेखा से घेरना चाहिये।।६३-६६।।

शिलायां फलके वस्त्रे ताम्रपत्रेऽथ कुड्यके।
ताडपत्रेऽथ भूर्जे वा रोचनानाभिकुङ्कुमैः॥६७॥
यन्त्रमेतत्समालिख्य निराहारो जितेन्द्रियः।
कपेः प्राणान्प्रतिष्ठाप्य पूजयेत्तद्यथाविधि॥६८॥
अशेषदुःखशान्त्यर्थं यन्त्रं सन्धारयेद् बुधः। मारीज्वराभिचारादिसर्वोपद्रवनाशनम्॥६९॥
योषितामपि बालानां धृतं जनमनोहरम्। भूतकृत्यापिशाचानां दर्शनादेव नाशनम्॥७०॥

यह यन्त्र, शिला, तख्ता, वस्त्र, ताम्रपत्र, दीवार, तालपत्र किंवा भोजपत्र पर गोरोचन, कस्तूरी, कुंकुम मिलाकर बनी स्याही से लिखे। उपवासी तथा इन्द्रियों को वशीभूत किये हुये साधक उसमें हनुमत् प्रतिष्ठा करे। तदनन्तर सविधि पूजा करे। यह यन्त्र बुधजन अशेष दुःख शान्त करने हेतु धारण करे। यह महामारी, ज्वर, अभिचार आदि सभी उपद्रवों को नाश करने वाला यन्त्र है। इस यन्त्र प्रभाव से स्त्रियां, बालायें तथा लोग वशीभूत हो जाते हैं। यन्त्रधारी को देखते ही भूत, कृत्या, पिशाचादि नष्ट हो जाते हैं।।६७-७०।।

मालामन्त्रमथो वक्ष्ये तारो वाग्विष्णुगेहिनी।
दीर्घत्रयान्विता माया प्रागुक्तं कूटपञ्चकम्॥७१॥
ध्रुवो हृद्धनुमान्ङेन्तोऽथ प्रकटपराक्रमः।
आक्रान्तदिङ्मण्डलान्ते यशोवितानसंवदेत्॥७२॥
धवलीकृतवर्णान्ते जगत्त्रितयवज्र च। देहज्वलदग्निसूर्य कोट्यन्ते च समप्रभ॥७३॥
तनूरुहपदान्ते तु रुद्रावतार संवदेत्। लङ्कापुरी ततः पश्चाद्दहनोदधिलङ्घन॥७४॥
दशग्रीवशिरः पश्चात्कृतान्तकपदं वदेत्। सीतान्ते श्वसनपदं वाय्वन्ते सुतमीरयेत्॥७५॥
अञ्जनागर्भसम्भूतः श्रीरामलक्ष्मणान्वितः। नन्दन्ति करवर्णान्ते सैन्यप्राकार ईरयेत्॥७६॥
सुग्रीवसख्यकाद्वर्णाद्रणवालिनिवर्हण। कारणद्रोणशब्दान्ते पर्वतोत्पाटनेति च॥७७॥
अशोकवनवीथ्यन्ते दारुणाक्षकुमारक। छेदनान्ते वनरक्षाकरान्ते तु समूह च॥७८॥
विभञ्जनान्ते ब्रह्मास्त्रब्रह्मशक्ति ग्रसेति च। लक्ष्मणान्ते शक्तिभेदनिवारणपदं वदेत्॥७९॥
विशल्योषधिशब्दान्ते समानयन सम्पठेत्। बालोदित ततो भानुमण्डलग्रसनेति च॥८०॥
मेघनादहोमपदाद्विध्वंसनपदं वदेत्। इन्द्रजिद्वधकारान्ते णसीतारक्षकेति च॥८१॥
राक्षसीसङ्घशब्दान्ते विदारणपदं वदेत्। कुम्भकर्णादिसङ्कीर्त्यवधान्ते च परायण॥८२॥
श्रीरामभक्तिवर्णान्ते तत्परेति समुद्र च। व्योमद्रुमलङ्घनेति महासामर्थ्य संवदेत्॥८३॥

महातेजः पुञ्जशब्दाद्विराजमानवोच्चरेत्। स्वामिवचनसम्पादितार्जुनान्ते च संयुग॥८४॥
सहायान्ते कुमारेति ब्रह्मचारिन्पदं वदेत्। गम्भीरशब्दोदयान्ते दक्षिणापथ संवदेत्।
मार्त्तण्डमेरुशब्दान्ते　　वदेत्पर्वतपीठिका॥८५॥

अब मैं माला मन्त्र कहता हूं—

तार (ॐ) वाग् (ऐं) विष्णुगेहिनी (श्रीं) दीर्घ त्रयान्विता माया (ह्रां, ह्रीं ह्रूं), पहले कहे कूट पंचक (हस्फ्रें, ख्फ्रें, ह्सौं, हस्ख्फ्रें, ह्सौं) यह मन्त्र है। ॐ नमः हनुमते प्रकट पराक्रम आक्रान्त दिङ्मण्डल यशोवितान धवलीकृत जगत् त्रितय वज्रदेह ज्वलदग्निसूर्यकोटि समप्रभ तनूरुह रुद्रावतार लंकापुरी दृहनोदधिलङ्घन दशग्रीव शिरः कृतान्तक सीता श्वसन वायुसुत अञ्जनागर्भसम्भूत श्रीरामलक्ष्मणान्वित नदन्ति कर सैन्य प्राकार सुग्रीवसख्यकाद्रण बालिनिबर्हण कारणद्रोण पर्वतोत्पाटन अशोक वनवीथि दारुणाक्षकुमारछेदक वनरक्षा समूह विभञ्जनान्ते ब्रह्मास्त्रशक्तिग्रस्त लक्ष्मण शक्तिभेद निवारण विशल्योषधि समानयन बालोदित भानुमण्डलग्रसन मेघनादहोमविध्वंसनं इन्द्रजिद्वध सीतारक्षक राक्षसी संघ विदारण कुंभकर्णादि वध परायण। श्रीरामभक्ति तत्पर समुद्र व्योमद्रुमलंघन महासामर्थ्य महातेजःपुञ्ज विराजमान। स्वामिवचन सम्पादितार्जुन संयुग सहाय कुमार ब्रह्मचारि गंभीर शब्दोदय दक्षिणपथ मार्त्तण्डमेरु पर्वत पीठिका।।७१-८५।।

अर्चनान्ते तु सकलमन्त्रान्ते मपदं वदेत्। आचार्यमम शब्दान्ते सर्वग्रहविनाशन॥८६॥
सर्वज्वरोच्चाटनान्ते　सर्वविषविनाशन।　सर्वापत्तिनिवारण　सर्वदुष्टनिबर्हण॥८७॥
सर्वव्याध्यादि　सम्प्रोच्य　भयान्ते　च　निवारण॥८८॥
सर्वशत्रुच्छेदनेति　ततो　मम　परस्य　च॥८९॥
ततस्त्रिभुवनान्ते तु पुंस्त्रीनपुंसकात्मकम्। सर्वजीवपदान्ते तु जातं वशययुग्मकम्॥९०॥
ममाज्ञाकारकं　पश्चात्सम्पादययुगं　पुनः।
ततो　नानानामधेयान्सर्वान्　राज्ञः　स　सम्पठेत्॥९१॥
परिवारान्ममेत्यन्ते　सेवकान्　कुरु　युग्मकम्।
सर्वशस्त्रास्त्रवीत्यन्ते　षाणि　विध्वंसयद्वयम्॥९२॥
लज्जादीर्घत्रयोपेता होत्रयं चैहि युग्मकम्। विलोमं पञ्चकूटानि सर्वशत्रून्हनद्वयम्॥९३॥
परबलानि　परान्ते　सैन्यानि　क्षोभयद्वयम्॥९४॥
मम　सर्वं　कार्यजातं　साधयेति　द्वयं　ततः॥९५॥
सर्वदुष्टदुर्जनान्ते मुखानि कीलयद्वयम्। धेत्रयं वर्मत्रितयं फट्त्रयं हान्त्रयं ततः॥९६॥
वह्निप्रियान्तो　मन्त्रोऽयं　मालासंज्ञोऽखिलेष्टदः॥९७॥
वस्वष्टबाणवर्णोऽयं　मन्त्रः　सर्वेष्टसाधकः॥९८॥

अर्चन के अन्त में सभी मन्त्रों के अन्त में कहे "आचार्य मम सर्वग्रह विनाशन सर्वज्वरोच्चाटन, सर्वविषविनाशन, सर्वापत्तिनिवारण, सर्वदुष्टनिबर्हण, सर्वव्याधि भय निवारण, सर्वशत्रुच्छेदन मम परस्य त्रिभुनान्ते

पुंस्त्रीनपुंसक सर्वजीव वश्य वश्य ममाज्ञाकारकं सम्पादय सम्पादय नाना नामधेयासर्वान् राज्ञ परिवारान् मम सेवकान् कुरु कुरु, सर्वशास्त्रास्त्रषाणि विध्वंसय विध्वंसय ह्रां ह्रीं ह्रूं हन हन हन चैहि चैहि, ह्सौं, हस्ख्फ्रें हस्त्रौं ख्फ्रें हस्फ्रें सर्वशत्रून् हन हन परवलानि सैन्यानि क्षोभय-क्षोभय, मम सर्व कार्यजातं साधय साध्य सर्वदुष्टदुर्जन मुखानि कीलय कीलय। हुं हुं हुं फट् फट् फट् स्वाहा।'' यह मालासंज्ञक मन्त्र अखिल इष्टप्रद है। (यह जो मालामन्त्र है इसका मन्त्रोद्धार एक बार विज्ञ गुरु जांच लें तब कोई इसका प्रयोग करे।)।।८६-९८।।

महाभये महोत्पाते स्मृतोऽयं दुःखनाशनः।
द्वादशार्णस्य षट्कूटं त्यक्त्वा बीजं तथादिमम्॥९९॥
पञ्चकूटात्मको मन्त्रः सर्वकामप्रदायकः।
रामचन्द्रो मुनिश्चास्य गायत्री छन्द ईरितम्॥१००॥
हनुमान्देवता प्रोक्तो विनियोगोऽखिलाप्तये।
पञ्चबीजैः समस्तेन षडङ्गानि समाचरेत्॥१०१॥

महाभय तथा महोत्पात काल में इस मन्त्र के स्मरणमात्र से दुःखनाश होता है। द्वादशाक्षर में जो अन्तिम षट्कूट छोड़कर ''हनुमते नमः'' को तथा आदिबीज ''ह्रौं'' को छोड़े। तब बाकी बचे ५ बीज से पंचाक्षर मन्त्र होगा। यह सर्वकामनाप्रद है। वह है ''हस्फ्रें ख्फ्रें हस्त्रौं हस्ख्फ्रें ह्सौं'' यह मन्त्र भी सर्वकामफलप्रद हैं। इसके ऋषि हैं रामचन्द्र, छन्दः है गायत्री, देवता हैं हनुमान्। सर्ववस्तुलाभार्थ इसका विनियोग होता है। इन पंचबीज से तथा पूर्ण मन्त्र से षडङ्गन्यास करना चाहिये।।९९-१०१।।

रामदूतो लक्ष्मणान्ते प्राणदाताञ्जनीसुतः। सीताशोकविनाशोऽयं लङ्काप्रासादभञ्जनः॥१०२॥
हनुमदाद्याः पञ्चैते बीजाद्या ङेयुताः पुनः। षडङ्गमनवो ह्येते ध्यानपूजादि पूर्ववत्॥१०३॥

रामदूत, लक्ष्मण प्राणदात, अंजनीसुत, सीताशोकविनाशन तथा लंका प्रासादभंजन ये पंचनाम हैं। इनसे पूर्व में हनुमत नाम है। इन नाम के आदि में उपरोक्त पंचबीज लगाकर चतुर्थी विभक्ति अन्त में लगाये। ये ही षडङ्ग मन्त्र हैं। इनका ध्यान-पूजन पूर्ववत् है। (यह षडङ्ग स्पष्टतः कहा जा रहा है)—

हस्फ्रें हनुमते नमः — हृदयाय नमः।
ख्फ्रें रामभक्ताय नमः — शिरसे स्वाहा।
हस्त्रौं लक्ष्मण प्राणदात्रे नमः — शिखायै वषट्।
हस्ख्फ्रें अञ्जनी सुताय नमः — कवचाय हुं।
ह्सौं सीताशोकविनाशाय नमः — नेत्रत्रयाय वौषट्।
हस्फ्रें ख्फ्रें हस्त्रौं हस्ख्फ्रें हसौं लंकाप्रासादभंजनाय नमः—अस्त्राय फट्।।१०२-१०३।।

प्रणवो वाग्भवं पद्मा माया दीर्घत्रयान्विता।
पञ्चकूटानि मन्त्रोऽयं रुद्रार्णः सर्वसिद्धिदः॥१०४॥
ध्यानपूजादिकं सर्वमस्यापि पूर्ववन्मतम्। अयमाराधितो मन्त्रः सर्वाभीष्टप्रदायकः॥१०५॥

प्रणव, वाग्भव, पद्मा, तीन दीर्घस्वरान्वित माया बीज तथा पंचकूट—यह एकादश अक्षरात्मक मन्त्र सर्वसिद्धिप्रद है। मन्त्रोद्धार है—

ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं हं हस्फ्रें ख्फ्रें हस्त्रौं हस्ख्फ्रें ह्सौं—यह एकादशाक्षरमन्त्र सर्वसिद्धिदायक है। इसका ध्यान पूजनादि पूर्ववत् है। इसकी आराधना सर्वाभीष्टदायक है।।१०४-१०५।।

नमो भगवते पश्चादनन्तश्चन्द्रशेखरां। जनेयाय महान्ते तु बलायान्तेऽग्निवल्लभाः॥१०६॥
अष्टादशार्णो मन्त्रोऽयं मुनिरीश्वरसंज्ञकः। छन्दोऽनुष्टुप्देवता तु हनुमान्पवनात्मजः॥१०७॥
हं बीजं वह्निवनिता शक्तिः प्रोक्ता मनीषिभिः।
आञ्जनेयाय हृदयं शिरश्च रुद्रमूर्तये॥१०८॥
शिखायां वायुपुत्रायाग्निगर्भाय वर्मणि। रामदूताय नेत्रं स्याद्ब्रह्मास्त्रायास्त्रमीरितम्॥१०९॥
तप्तचामीकरनिभं भीघ्नसंविहिताञ्जलिम्।
चलत्कुण्डलदीप्तास्यं पद्माक्षं मारुतिं स्मरेत्॥११०॥
ध्यात्वैवमयुतं जप्त्वा दशांशं जुहुयात्तिलैः। वैष्णवे पूजयेत्पीठे प्रागुद्दिष्टेन वर्त्मना॥१११॥
अष्टोत्तरशतं नित्यं नक्तभोजी जितेन्द्रियः।
जपित्वा क्षुद्ररोगेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः॥११२॥

"नमो भगवते आञ्जनेयाय महाबलाय स्वाहा" यह अष्टादशाक्षर मन्त्र है। इसके ऋषि हैं ईश्वर, छन्दः है अनुष्टुप्, पवनपुत्र हनुमत् देवता हैं। हं बीज तथा स्वाहा शक्ति है। यह विद्वानों का कथन है। इसका न्यास एवंविध होगा—

आञ्जनेयाय नमः — हृदयाय नमः।
रुद्रमूर्त्तये नमः — शिरसे स्वाहा।
वायुपुत्राय नमः — शिखायै वषट्।
अग्निगर्भाय नमः — कवचाय हुं।
रामदूताय नमः — नेत्रत्रयाय वौषट्।
ब्रह्मास्त्राय नमः — अस्त्राय फट्।

इस प्रकार न्यास कथित है। अब ध्यान कहते हैं। तप्त स्वर्ण के समान कांतिवाले भयनाशक, हनुमान ने अंजलिबद्ध किया है। (राम के समक्ष अंजलिबद्ध हैं) उनका मुख चंचल कुण्डलों के कारण दीप्त है। उनके नेत्र पद्म के समान हैं। ऐसे हनुमान् का ध्यान करे। ध्यानोपरान्त दस हजार मन्त्र जप करके एक हजार होम करना चाहिये। यह होम तिल से किया जायेगा। इनका पूजन वैष्णव पीठ पर पूर्वोक्त विधान से करे। जो नित्य एक बार भोजन करता हुआ नित्य इस मन्त्र का १०८ जप करता है तथा जितेन्द्रिय रहता है, वह क्षुद्र रोगसमूह से निश्चित रूपेण मुक्त हो जाता है। यह निःसंशय है।।१०६-११२।।

महारोगनिवृत्त्यै तु सहस्रं प्रत्यहं जपेत्।
राक्षसौघं विनिघ्नन्तं कपिं ध्यात्वाघनाशनम्॥११३॥
अयुतं प्रजपेन्नित्यमचिराज्जयति द्विषम्। सुग्रीवेण समं रामं सन्दधानं कपिं स्मरन्॥११४॥
प्रजपेदयुतं यस्तु सन्धिं कुर्याद्द्विपद्वयोः। ध्यात्वा लङ्कां दहन्तं तमयुतं प्रजपेन्मनुम्॥११५॥

अचिरादेवं शत्रूणां ग्रामान्सम्प्रदहेत्सुधीः।
ध्यात्वा प्रयाणसमये हनुमन्तं जपेन्मनुम्॥११६॥

महारोग निवृत्ति हेतु इसका नित्यप्रति १००० जप करे। जो राक्षस सैन्य का वध करने वाले पापहारी हनुमान का ध्यान तथा दस सहस्र जप सम्पन्न करता है, वह शीघ्र शत्रुजित् हो जाता है। राम से सुग्रीव की सन्धि कराते हुये वायुपुत्र हनुमान का ध्यान करने वाला साधक दस सहस्र जप करे। वह यथाशीघ्र शत्रु से मित्रता कर लेगा। लंकादाह करते हनुमान का स्मरण करने वाला दस सहस्र मन्त्र जप करे। वह सुधी साधक शीघ्र शत्रुओं का ग्राम दाह कर देता है। प्रयाणकाल में (यात्रा काल में) हनुमत् ध्यानोपरान्त हनुमत् मन्त्र जप करे। वह शीघ्र कार्य में सफल होकर गृहागमन करेगा।।११३-११६।।

यो याति सोऽचिरात्स्वेष्टं साधयित्वा गृहे व्रजेत्।
हनुमन्तं सदा गेहे योऽर्चयेज्जपतत्परः॥११७॥
आरोग्यं च श्रियं कान्तिं लभते निरुपद्रवम्।
कानने व्याघ्रचौरेभ्यो रक्षेन्मनुरयं स्मृतः॥११८॥
प्रस्वापकाले शय्यायां स्मरेन्मन्त्रमनन्यधीः।
तस्य दुःस्वप्नचौरादिभयं नैव भवेत्क्वचित्॥११९॥
वियत्सेन्दुर्हुनुमते ततो रुद्रात्मकाय च।
वर्मास्त्रान्तो महामन्त्रो द्वादशार्णोऽष्टसिद्धिकृत्॥१२०॥

जो स्वगृह में सदैव हनुमत् ध्यान करता रहता है, उसे आरोग्य तथा कान्ति प्राप्त होती है। उसका जीवन उपद्रव रहित बना रहता है। यह मन्त्र वन में व्याघ्र-चोरभय होने पर स्मरण करे। अनन्य चित्ततापूर्वक सोते समय इसका शय्या पर स्मरण करे। उसे कभी भी दुःस्वप्न तथा चोरादि का भय नहीं होगा। "हं हनुमते रुद्रात्मकाय हुं फट्" यह द्वादशाक्षर महामन्त्र अष्टसिद्धिप्रद है।।११७-१२०।।

रामचन्द्रो मुनिश्चास्य जगती छन्द ईरितम्। हनुमान्देवता बीजमाद्यं शक्तिर्हुमीरिता॥१२१॥
षड्दीर्घभाजा बीजेन षडङ्गानि समाचरेत्।
महाशैलं समुत्पाट्य धावन्तं रावणं प्रति॥१२२॥
लाक्षारक्तारुणं रौद्रं कालान्तकयमोपमम्। ज्वलदग्निसमं जैत्रं सूर्यकोटिसमप्रभम्॥१२३॥

इसके ऋषि हैं रामचन्द्र! छन्दः है जगती, देवता हैं हनुमान्। बीज हैं "हं"। शक्ति है 'हुं'। षड्दीर्घयुक्त बीजमन्त्र द्वारा षडङ्न्यासोपरान्त हनुमत् ध्यान करे। ध्यान-हनुमान् महान् पर्वत उत्पाटित करके (उखाड़ कर) रावण की ओर धावमान हैं। उनका वर्ण लाक्षारसवत् अरुण है। वे यम के समान भयंकर हैं। उनकी कांति जाज्वल्यमान अग्नि तथा कोटिसूर्य समप्रभ है।।१२१-१२३।।

अङ्गदाद्यैमहावीरैर्वेष्टितं रुद्ररूपिणम्। तिष्ठ तिष्ठ रणे दुष्ट सृजन्तं घोरनिःस्वनम्॥१२४॥
शैवरूपिणमभ्यर्च्य ध्यात्वा लक्षं जपेन्मनुम्।
दशांशं जुहुयाद्व्रीहीन्पयोदध्याज्यमिश्रितान्॥१२५॥

पूर्वोक्ते वैष्णवे पीठे विमलादिसमन्विते।
मूर्तिं सङ्कल्प्य मूलेन पूजा कार्या हनूमतः॥१२६॥
ध्यानैकमात्रोऽपि नृणां सिद्धिरेव न संशयः।
अथास्य साधनं वक्ष्येलोकानां हितकाम्यया॥१२७॥

अंगद प्रभृति महान् वीरों ने उन रुद्ररूपी महावीर को चतुर्दिक् से घेर लिया है। वे रण में गर्जन कर रहे हैं—हे दुष्ट! खड़ा रह!'' शैवरूपी हनूमान् के ध्यानोपरान्त एक लक्ष मन्त्र जप करके दस हजार होम दुग्ध, दधि तथा घृत से मिश्रित धान्य से करे। (इस मन्त्र के ध्यान मात्र से मानव सिद्धिलाभ करता है। यह निःसंशय है।) पूर्वोक्त वैष्णव पीठ पर मूलमन्त्र से इनकी मूर्त्ति का संकल्प करके हनुमान की पूजा करे। ध्यान मात्र से ही मनुष्यों को सिद्धिलाभ होता है। इसमें तनिक संशय नहीं है। अब लोककल्याणार्थ अन्य साधना कहता हूं।।१२४-१२७।।

हनुमत्साधनं पुण्यं महापातकनाशनम्। एतद् गुह्यतमं लोके शीघ्रसिद्धिकरं परम्॥१२८॥
मन्त्री यस्य प्रसादेन त्रैलोक्यविजयी भवेत्।
प्रातः स्नात्वा नदीतीरे उपविश्य कुशासने॥१२९॥
प्राणायामषडङ्गे च मूलेन सकलं चरेत्।
पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्त्वा ध्यात्वा रामं ससीतकम्॥१३०॥
ताम्रपात्रे ततः पद्ममष्टपत्रं सकेशरम्। कुचन्दनेन घृष्टेन संलिखेत्तच्छलाकयां॥१३१॥
कर्णिकायां लिखेन्मन्त्रं तत्रावाह्य कपीश्वरम्।
मूर्तिं मूलेन सङ्कल्प्य ध्यात्वा पाद्यादिकं चरेत्॥१३२॥

हनुमत् साधना पुण्यमयी तथा महापातक नाशक है। यह लोकों में गुह्यतम है तथा शीघ्र सिद्धिदायक है। मन्त्रज्ञ साधक इसकी कृपा से त्रैलोक्यविजयी हो जाता है। प्रातः स्नान करके नदी तट पर कुशासनासीन हो जाये। वहां प्राणायाम करके मूलमन्त्र द्वारा विधिवत् षडङ्गन्यास सम्पन्न करे। इसके पश्चात् सीता तथा राम के ध्यानोपरान्त केसर एवं लाल चन्दन द्वारा लालचन्दन की ही कलम से ताम्रपत्र पर अष्टदल कमल लिखे। कर्णिका पर मन्त्र लिखकर वहीं हनुमत् आवाहन करके ध्यानोपरान्त मूलमन्त्र पढ़ते हुये हनुमान की मूर्त्ति प्रतिष्ठित करे। उनको पाद्य प्रभृति प्रदान करे।।१२८-१३२।।

गन्धपुष्पादिकं सर्वं निवेद्य मूलमन्त्रतः। केसरेषु षडङ्गानि दलेषु च ततोऽर्चयेत्॥१३३॥
सुग्रीवं लक्ष्मणं चैव ह्यङ्गदं नलनीलकौ।
जाम्बवन्तं च कुमुदं केसरीशं दलेऽर्चयेत्॥१३४॥
दिक्पालांश्चापि वज्रादीन्पूजयेत्तदनन्तरम्।
एवं सिद्धे मनौ मन्त्री साधयेत्स्वेष्टमात्मनि॥१३५॥
नदीतीरे कानने वा पर्वते विजनेऽथवा। साधयेत्साधकश्रेष्ठो भूमिग्रहणपूर्वकम्॥१३६॥

मूलमन्त्र से गन्धादि पुष्प प्रभृति निवेदन करे। पद्मकेसर पर षडङ्ग देवता तथा दलों पर सुग्रीव, लक्ष्मण, अंगद, नल, नील, जामवन्त, कुमुद, केसरीश की अर्चना करके, उसके बाह्य से दिक्पालगण तथा उनके वज्रादि आयुधों की पूजा करे। इस प्रकार साधक मन्त्रसिद्ध होकर अपनी वांछित इष्टकामना पूर्ण करे।।१३३-१३६।।

जिताहारो जितश्वासो जितवाक्च जितेन्द्रियः।
दिग्बन्धनादिकं कृत्वा न्यासध्यानादिर्पूवकम्।।१३७।।
लक्षं जपेन्मन्त्रराजं पूजयित्वा तु पूर्ववत्।
लक्षान्ते दिवसं प्राप्य कुर्य्याच्च पूजनं महत्।।१३८।।
एकाग्रमनसा सम्यग्ध्यात्वा पवननन्दनम्।
दिवारात्रौ जपं कुर्याद्यावत्सन्दर्शनं भवेत्।।१३९।।
सुदृढ साधकं मत्वा निशीथे पवनात्मजः।
सुप्रसन्नस्ततो भूत्वा प्रयाति साधकाग्रतः।।१४०।।
यथेप्सितं वरं दत्त्वा साधकाय कपीश्वरः। वरं लब्ध्वा साधकेन्द्रो विहरेदात्मनः सुखैः।।१४१।।

वह साधक नियमित अल्पाहार करे। वह श्वास पर विजयी रहे, वाक् का सम्यक् कम से कम उपयोग करे। इन्द्रियजित् होकर न्यास, ध्यान, दिग्बन्धनादि सम्पन्न करे तथा एकलक्ष मन्त्र जप तथा पूर्ववत् पूजनादि करे। मन्त्र जप पूर्ण होने वाले दिन विशिष्ट रूप से पूजन करना चाहिये। तब तक एकाग्रता के साथ पवनपुत्र का सम्यक् ध्यान करते हुये अहर्निश जप करता रहे, जब तक उनका दर्शन लाभ न हो। भगवान् हनुमान जब साधक की लक्ष्य के प्रति दृढ़ता को जान लेते हैं, तब वे साधक के प्रति प्रसन्न होकर रात्रि में साधक के समक्ष प्रकट होकर उसे ईप्सित वर प्रदान करते हैं। श्रेष्ठ साधक वरलाभ द्वारा सुखपूर्वक पृथिवी पर विचरण करता है।।१३७-१४१।।

एतद्धि साधनं पुण्यं लोकानां हितकाम्यया।
प्रकाशितं रहस्यं वै देवानामपि दुर्लभम्।।१४२।।
अन्यानपिप्रयोगांश्च साधयेदात्मनो हितान्।
वियदिन्दुयुतं पश्चान्ङेन्तं पवननन्दनम्।।१४३।।
वह्निप्रियान्तो मन्त्रोऽयं दशार्णः सर्वकामदः।
मुन्यादिकं च पूर्वोक्तं षडङ्गान्यपि पूर्ववत्।।१४४।।
ध्यायेद्रणे हनूमन्तं सूर्यकोटिसमप्रभम्। धावन्तं रावणं जेतुं दृष्ट्वा सत्वरमुत्थितम्।।१४५।।
लक्ष्मणं च महावीरं पतितं रणभूतले। गुरुं च क्रोधमुत्पाद्य ग्रहीतुं गुरुपर्वतम्।।१४६।।
हाहाकारैः सदर्पैशच कम्पयन्तं जगत्त्रयम्।
आब्रह्माण्डं समाव्याप्य कृत्वा भीमं कलेवरम्।।१४७।।

लक्षं जपेद्दशांशेन जुहुयात्पूर्ववत्सुधीः।
पूर्ववत्पूजनम् प्रोक्तं मन्त्रस्यास्य विधानतः॥१४८॥

मैंने इस पुण्यमय साधन के रहस्य को लोगों के हितार्थ प्रकाशित किया है। यह साधन देवगण के लिये भी दुर्लभ है। आत्महितार्थ अन्य साधन भी कर सकते हैं। इन्दु युक्त वियत (हं) के पश्चात् चतुर्थी विभक्त्यन्त पवन नन्दन शब्द लगाकर वह्निप्रिया (स्वाहा) कहे। मन्त्रोद्धार होगा "हं पवननन्दनाय स्वाहा।" यह दशाक्षरमन्त्र सर्वकामना पूरक है। इसके ऋषि प्रभृति पूर्ववत् जानें। षडङ्गन्यास भी पूर्व की ही तरह होगा। ध्यान—रण में स्थित हनुमान कोटिसूर्य समप्रभ हैं। वे रण में भाग रहे रावण को देखकर उसे पकड़ने हेतु उठ गये हैं। उन्होंने रण में भूपतित लक्ष्मण को देख लिया है। इससे क्रोधित होकर हनुमान एक महापर्वत उखाड़ लाने हेतु दौड़ पड़ते हैं। इससे त्रैलोक्य में हाहाकार शब्द उत्थित हो गया। हनुमान का भयानक शरीर देखकर ब्रह्माण्ड कम्पित हो उठा। इस ध्यान के उपरान्त सुधी साधक एकलक्ष मन्त्र जप करे तथा दशांश हवन करे। यहां भी शेष विधि पूर्ववत् करे।।१४२-१४८।।

एवं सिद्धे मनौ मन्त्री साधयेदात्मनो हितम्।
अस्यापि मन्त्रवर्यस्य रहस्यं साधनं तु वै॥१४९॥
सुगोप्यं सर्वतन्त्रेषु न देयं यस्य कस्यचित्।
ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय कृतनित्यक्रियः शुचिः॥१५०॥
गत्वा नदीं ततः स्नात्वा तीर्थमावाह्य चाष्टधा।
मूलमन्त्रं ततो जप्त्वा सिञ्चेदादित्यसंख्यया॥१५१॥
एवं स्नानादिकं कृत्वा गङ्गातीरेऽथवा पुनः।
पर्वते वा वने वापि भूमिग्रहणपूर्वकम्॥१५२॥
आद्यवर्णैः पूरकं स्यात्पञ्चवर्गैश्च कुम्भकम्।
रेचकं च पुनर्याद्यैरेवं प्राणान्नियम्य च॥१५३॥
विधाय भूतशुद्ध्यादि पीठन्यासावधि पुनः।
ध्यात्वा पूर्वोक्तविधिना सम्पूज्य च कपीश्वरम्॥१५४॥
तदग्रे प्रजपेन्नित्यं साधकोऽयुतमादरात्।
सप्तमे दिवसे प्राप्ते कुर्याच्च पूजनम् महत्॥१५५॥

यह मन्त्र इस प्रकार से सिद्ध करके मन्त्रज्ञ साधक अपना हित करे। इस मन्त्रवर का रहस्य एवं साधन सभी तन्त्रों में गोपनीय रखा गया है। इसे जिस किसी को प्रदान नहीं करे। ब्राह्म मुहूर्त्त में साधक उठकर नित्यक्रिया द्वारा शुद्ध हो जाये। वह आठ तीर्थों का आवाहन करके नदी पर स्नान करे। वहां मूलमन्त्र का जप करते हुये स्वयं को बारह बार जल से सिंचित करे। तदनन्तर वह पुनः स्नानादि करके गंगा तीर पर अथवा पर्वत किंवा वन में आसनासीन होकर मन्त्र के आद्य अक्षर के पूरक, पंचवर्ग से कुंभक तथा 'य' प्रभृति अक्षरों द्वारा रेचक करे। यह तीनों प्राणायाम करने के उपरान्त वह पीठन्यास, भूतशुद्धि करके पूर्वकथित विधानानुरूप हनुमत्

ध्यान एवं पूजन करे। हनुमान के समक्ष नित्य सादर १०००० जप करे। सातवें दिवस पर महापूजा करना चाहिये।।१४९-१५५।।

एकाग्रमनसा मन्त्री दिवारात्रं जपेन्मनुम्।
महाभयं प्रदत्त्वा त्रिभागशेषासु निश्चितम्॥१५६॥
यामिनीषु समायाति नियतं पवनात्मजः। यथेप्सितं वरं दद्यात्साधकाय कपीश्वरः॥१५७॥
विद्यां वापि धनं वापि राज्यं वा शत्रुनिग्रहम्।
तत्क्षणादेव चाप्नोति सत्यं सत्यं न संशयः॥१५८॥

साधक एकाग्रता के साथ अहर्निश मन्त्रजप तत्पर रहे। वह इस क्रिया से भयभीत हो जायेगा। तब रात्रिकाल में हनुमान महाभय दिखलाते प्रत्यक्ष होकर वर देते हैं। उस विद्या, धन, राज्य शत्रुनाश प्रभृति सभी वांछितार्थ की प्राप्ति हो जाती है। हनुमान उसे यह सब तत्क्षण प्रदान करते हैं। यह सत्य है। इसमें कोई संशय नहीं है।।१५६-१५८।।

इह लोकेऽखिलान्कामान्भुक्त्वान्ते मुक्तिमाप्नुयात्।
सद्याचितं वायुयुग्मं हनूमन्तेति चोद्धरेत्॥१५९॥
फलान्ते फक्रियानेत्रयुक्ता च कामिका ततः।
धग्गन्ते धगितेत्युक्त्वा आयुरास्व पदं ततः॥१६०॥
लोहितो गरुडो हेतिबाणनेत्राक्षरो मनुः। मुन्यादिकं तु पूर्वोक्तं प्लीहरोगहरो हरिः॥१६१॥

वह व्यक्ति इहलोक में समस्त भोगों को भोगकर अन्त में मुक्त हो जाता है। "सद्याचिंत वायुयुग्मं हनुमन्तेति चोद्धरेत्। फलान्ते फक्रियानेत्रयुक्ता च कामिका ततः धग्गन्ते धगितेत्युक्त्वा हनुमन्तेति चोद्धरेत्। लोहितो गरुड़ों हेति बाणनेत्राक्षरो मनुः।" (यह मन्त्र संकेत है, तथापि इसका मन्त्रोद्धार अज्ञता के कारण नहीं हो सका। सम्मेलन संस्करण में जो मन्त्रोद्धार है, वह ठीक नहीं प्रतीत होता। अतः विज्ञजन इसका मन्त्रोद्धार करें)। इस मन्त्र के मुनि प्रभृति पहले मन्त्र की तरह हैं। तथापि देवता हैं प्लीहारोगहारी श्रीहरि।।१५९-१६१।।

देवता च समुद्दिष्टा प्लीहयुक्तोदरे पुनः। नागवल्लीदलं स्थाप्यमुपर्याच्छादयेत्ततः॥१६२॥
वस्त्रं चैवाष्टगुणितं ततः साधकसत्तमः।
शकलं वंशजं तस्योपरि मुञ्चेत्कपिं स्मरेत्॥१६३॥
आरण्यसाणकोत्पन्ने वह्नौ यष्टिं प्रतापयेत्।
बदरीभूरुहोत्थां तां मन्त्रेणानेन सप्तधा॥१६४॥
तया सन्ताडयेद्वंशशकलं जठरस्थितम्।
सप्तकृत्वः प्लीहरोगो नाशमायाति निश्चितम्॥१६५॥

जिसे उदर में प्लीहा रोग हो, वह प्रातः भोर में पेट पर पान का पत्ता रखे। उसे आठ बार मोड़े हुये (आठ तह वाले) वस्त्र से ढांके। हनुमान का ध्यान करके उस पर एक बांस का टुकड़ा रखे। तब ऐसा बेर का

काष्ठ ले जो जंगल की दावाग्नि में तप्त हो। उस लाठी जैसे काष्ठ से बांस के टुकड़ें का ७ बार ताड़न करे। इससे प्लीहा रोग निश्चित रूप से समाप्त हो जायेगा।।१६२-१६५।।

तारो नमो भगवते आञ्जनेयाय चोच्चरेत्।
अमुकस्य शृङ्खलां त्रोटय द्वितयमीरयेत्॥१६६॥
बन्धमोक्षं कुरुयुगं स्वाहान्तोऽयं मनुर्मतः।
ईश्वरोऽस्य मुनिश्छन्दोऽनुष्टप्च देवता पुनः॥१६७॥
शृङ्खलामोचकः श्रीमान्हनूमान्पवनात्मजः।
हं बीजं ठद्वयं शक्तिर्बन्धमोक्षे नियोगता॥१६८॥
षड्दीर्घवह्नियुक्तेन बीजेनाङ्गानि कल्पयेत्।
वामे शैलं वैरिभिदं विशुद्धं टङ्कमन्यतः॥१६९॥
दधानं स्वर्णवर्णं च ध्यायेत्कुण्डलिनं हरिम्।
एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षदशांशं चूतपल्लवैः॥१७०॥
जुहुयात्पूर्ववत्प्रोक्तं यजनं वास्य सूरिभिः। महाकारागृहे प्राप्तो ह्ययुतं प्रजपेन्नरः॥१७१॥
शीघ्रं कारागृहान्मुक्तः सुखी भवति निश्चितम्।
यन्त्रं चास्य प्रवक्ष्यामि बन्धमोक्षकरं शुभम्॥१७२॥

"ॐ नमो भगवते आन्जनेयाय अमुकस्य शृंखला त्रोटय त्रोटय बन्ध मोक्ष कुरु कुरु स्वाहा।" इस मन्त्र के ऋषि ईश्वर, छन्दः अनुष्टुप्, देवता बन्धन छेदक वायुपुत्र श्रीमान् हनुमान हैं। बीज है 'हं' शक्ति है स्वाहा। बन्धन मोक्षार्थ इसका प्रयोग किया जाता है। षडदीर्घ तथा वह्नियुक्त (रे) बीज से अंगन्यास करना चाहिये। ध्यान—"श्री हनुमन ने वाम हाथ में पर्वत तथा दाहिने हाथ में गदा धारण किया है। ये स्वर्णवर्ण हैं, इनके कर्ण में कुण्डल शोभित है।" ध्यान के उपरान्त मन्त्र का एक लक्ष जप तथा १०००० होम आम के पल्लव से करे। धीमान् साधक मन्त्रपूजन पूर्ववत् करे। कारागार में बद्ध व्यक्ति इस मन्त्र का दस हजार जप करके बन्धन मुक्ति पा जाता है तथा आनन्दित हो जाता है। यह निश्चित है। अब इसका यन्त्र कहता हूं, जो शुभ तथा बन्धन से मुक्तिप्रद है।।१६६-१७२।।

अष्टच्छदान्तः षट्कोणं साध्यनामसमन्वितम्।
षट्कोणेषु ध्रुवं ङेन्तमाञ्जनेयपदं लिखेत्॥१७३॥
अष्टच्छदेषु विलिखेत्प्रणवो वातुवात्विति।
गोरोचनाकुङ्कुमेन लिखित्वा यन्त्रमुत्तमम्॥१७४॥
धृत्वा मूर्ध्नि जपेन्मन्त्रमयुतं बन्धमुक्तये।
यन्त्रमेतल्लिखित्वा तु मृत्तिकोपरि मार्जयेत्॥१७५॥
दक्षहस्तेन मन्त्रज्ञः प्रत्यहं मण्डलावधि। एवं कृते महाकारागृहान्मन्त्री विमुच्यते॥१७६॥

अष्टदल कमल में षट्दल बनाकर कर्णिका में साध्य व्यक्ति का नाम लिखे। षट्दलों में "ॐ आञ्जनेयाय" लिखे। अष्ट पत्रों पर प्रणव तथा वातु-वातु लिखे। बन्धन मोचनार्थ इसे गोरोचन तथा कुंकुम मिलाकर लिखकर मस्तक पर धारण करना होगा। तब इसके मन्त्र का १०००० जप करना होगा। साधक यन्त्र दाहिने हाथ में लेकर मृत्तिका पर मण्डलाकृति घुमाये। वह व्यक्ति अतिशीघ्र कारामुक्ति प्राप्त करेगा।।१७३-१७६।।

गगनं ज्वलनः साक्षी मर्कटेति द्वयं ततः। तोयं शशेषे मकरे परिमुञ्चति मुञ्चति॥१७७॥
ततः शृङ्खलिकां चेति वेदनेत्राक्षरो मनुः। इमं मन्त्रं दक्षकरे लिखित्वा वामहस्ततः॥१७८॥
दूरीकृत्य जपेन्मन्त्रमष्टोत्तरशतं बुधः। त्रिसप्ताहात्प्रबद्धोऽसौ मुच्यते नात्र संशयः॥१७९॥
मुन्याद्यर्चादिकं सर्वमस्य पूर्ववदाचरेत्। लक्षं जपो दशांशेन शुभैर्द्रव्यैश्च होमयेत्॥१८०॥

गगन (ह) नेत्र (इ) युक्तज्वलन (र) = **हरि** कहकर अब **मर्कट-मर्कट** कहे तदनन्तर शेष (आ) तोय (व), कहकर 'मकरे' कहे = **वाम करे**। तदनन्तर परिमुञ्चति मुञ्चति शृङ्खलिकाम् कहे। मन्त्रोद्धार है "हरि मर्कट मर्कट वाम करे परिमुञ्चति शृंखलिकाम्।" इस मन्त्र को बायें हाथ से लिखे तथा दाहिने हाथ पर लिखे। यह २४ अक्षरात्मक मन्त्र है। इसका जप २१ दिनों तक नित्य १०८ बार करे। ऐसा नित्य करे। उसे बन्धन मुक्ति मिलेगी। यह निःसंशय है। इसके ऋषि तथा प्रक्रिया आदि पूर्ववत् है। इसका एक लाख जप करके १०००० होम शुभ द्रव्यों से करे।।१७७-१८०।।

पुच्छाकारे सुवस्त्रे च लेखन्या क्षुरकोत्थया।
गन्धाष्टकैर्लिखेद्रूपं कपिराजस्य सुन्दरम्॥१८१॥
तन्मध्येऽष्टदशार्णं तु शत्रुनामान्वितं लिखेत्।
तेन मन्त्राभिजप्तेन शिरोबद्धेन भूमिपः॥१८२॥
जयत्यरिगणं सर्वं दर्शनामेव निश्चितम्। चन्द्रसूर्योपरागादौ पूर्वोक्तं लेखयेद्ध्वजे॥१८३॥
ध्वजमादाय मन्त्रज्ञः संस्पर्शान्मोक्षणावधि। मातृकां जापयेत्पश्चाद्दशांशेन च होमयेत्॥१८४॥
तिलैःसर्षपसम्मिश्रैः संस्कृते हव्यवाहने।
गजे ध्वजं समारोप्य गच्छेद्युद्धाय भूपतिः॥१८५॥
गजस्थं तं ध्वजं दृष्ट्वा पलायन्तेऽरयो ध्रुवम्।
महारक्षाकरं यन्त्रं वक्ष्ये सम्यग्घनूमतः॥१८६॥

अपनी बनाई लेखनी से इस मन्त्र का पुच्छाकार कपड़े पर लिखे। उस वस्त्र पर हनुमान् का सुन्दर चित्रलेखन अष्टगन्ध से करे। मध्य में शत्रुनाम युक्त अष्टादशाक्षर मन्त्र लिखे। (हनुमत् मन्त्र)। मन्त्राभिमन्त्रित करके यह वस्त्र शिर पर बांधे। ऐसा नृपति शत्रुसमूह को देखने मात्र से जीत लेता है। यह निश्चित है। चन्द्र-सूर्य ग्रहण काल में यह मन्त्र ध्वजा पर लिखे। स्पर्शकाल से ग्रहणमोक्ष तक यह धारण करके मातृका जप करे। तदनन्तर संस्कृत अग्नि में तिलयुक्त सरसों से होम करके वह पताका हाथ पर फहराये तथा उस पर आरूढ़ होकर राजा युद्धार्थ निकल पड़े। युद्धस्थल में उस फहराती पताका देखकर शत्रु पलायन कर जाते हैं। यह निश्चित है। अब हनुमान् का महारक्षाकारी यन्त्र सम्यक्तः कहता हूं।।१८१-१८६।।

लिखेद्वसुदलं पद्मं साध्याख्यायुतकर्णिकम्।
दलेऽष्टकोणमालिख्य मालामन्त्रेण वेष्टयेत्॥१८७॥
तद्बहिर्माययावेष्ट्य प्राणस्थापनमाचरेत्।
लिखितं स्वर्णलेखन्या भूर्जपत्रे सुशोभने॥१८८॥
काश्मीररोचनाभ्यां तु त्रिलोहेन च वेष्टितम्।
सम्पातसाधितं यन्त्रं भुजे वा मूर्ध्नि धारयेत्॥१८९॥
रणे दुरोदरे वादे व्यवहारे जयं लभेत्। ग्रहैर्विघ्नैर्विषैः शस्त्रैश्चौरैर्नैवाभिभूयते॥१९०॥
सर्वान्रोगानपाकृत्य चिरं जीवेच्छतं समाः।
षड्दीर्घयुक्तं गगनं वह्न्याख्यं तारसम्पुटम्॥१९१॥
अष्टार्णोऽयं महामन्त्रो मालामन्त्रोऽथ कथ्यते।
प्रणवो वज्रकायेति वज्रतुण्डेति सम्पठेत्॥१९२॥
कपिलान्ते पिङ्गलेति ऊद्ध्र्वकेशमहापदम्।
बलरक्तमुखान्ते तु तडिज्जिह्व महा ततः॥१९३॥
रौद्रदंष्ट्रोत्कटं पश्चात्कहद्वन्द्वं करालिति। महद्दृढप्रहारेण लङ्केश्वरबधात्ततः॥१९४॥
वायुर्महासेतुपदं बन्धान्ते च महा पुनः। शैलप्रवाह गगनेचर एह्येहि संवदेत्॥१९५॥
भगवन्महाबलान्ते पराक्रमपदं वदेत्। भैरवाज्ञापयैह्येहि महारौद्रपदं ततः॥१९६॥
दीर्घपुच्छेन वर्णान्ते वदेद्वेष्टय वैरिणम्। जम्भयद्वयमाभाष्य वर्मास्त्रान्तो मनुर्मतः॥१९७॥

कर्णिकायुक्त अष्टदल कमल बनाये। उस पर साध्य नाम अंकित करे। अब पत्रों पर अष्टकोण बनाकर मालामन्त्र से उसे आवेष्टित करे। बाह्य में माया बीज ह्रीं से आवृत्त करके प्राणप्रतिष्ठित करना होगा। उत्तम भोजपत्र पर स्वर्णशलाका से यह यंत्र बनाये। गोरोचन तथा कुंकुम से यन्त्र लिखा हो, तब त्रिलोह से आवेष्ठित करे। जो इस विधान से यन्त्र को बाहु में किंवा मस्तक में धारण करता है, वह अत्यन्त घोरतम युद्ध में शास्त्रार्थ में तथा व्यवहार (मुकदमें) आदि में विजय लाभ करता है। वह ग्रह, विघ्न, विष, शस्त्र तथा चौरों से ग्रस्त नहीं होता। वह सर्वव्याधिरहित होकर शतायु होता है। षड्दीर्घयुक्त गगन (ह) तथा वह्नि को ॐ से सम्पुटित करे। यह अष्टाक्षर महामन्त्र होता है। यथा—ॐ हां हीं हूं हैं, हौं हः ॐ।

अब मालामन्त्र कहते हैं—"ॐ वज्रकाय वक्रतुण्ड कपिल, पिंगल, ऊर्ध्वकेश बलरक्तमुख, तड़िजह्व, रौद्रदंष्ट्र, कट, कहद्वन्द्व, कराल, महद्दृढ़प्रहारेण (लंकेश्वर का वध करने वाले) लंकेश्वरवधात्ततः, वायुर्महासेतुपदं वन्धान्तेचमहापुनः शैलप्रवाह गगनेचर एहि एहि भगवन् महाबल, महापराक्रम, भैरव आज्ञापय एहि एहि महारौद्र, दीर्घपुच्छेन वैरिणं वेष्ठय वेष्ठय जम्भय जम्भय हुं फट्।"॥१८७-१९७॥

मालाह्वयो द्विजश्रेष्ठ शरनेत्रधराक्षरः। मालामन्त्राष्टार्णयोश्च मुन्याद्यर्चा तु पूर्ववत्॥१९८॥
जप्तो युद्धे जयं दद्याद्व्याधौ व्याधिविनाशनः। एवं यो भजते मन्त्री वायुपुत्रं कपीश्वरम्॥१९९॥

सर्वान्स लभते कामान्देवैरपि सुदुर्लभान्।
धन धान्यं सुतान्पौत्रान्सौभाग्यमतुलं यशः॥२००॥
मेधां विद्यां प्रभां राज्यं विवादे विजयं तथा।
वश्याद्यानि च कर्माणि सङ्गरे विजयं तथा॥२०१॥
उपासितोऽन्जनागर्भसम्भूतः प्रददात्यलम्॥२०२॥

इति श्रीबृहन्नारदीयपुराणे पूर्वभागे बृहदुपाख्याने सनत्कुमारविभागे तृतीयपादे हनुमन्मन्त्रकथनं नाम चतुःसप्ततितमोऽध्यायः।।७४।।
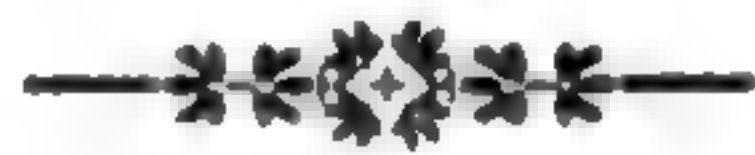
इस माला मन्त्र तथा इससे पहले कहे अष्टाक्षर मन्त्र के ऋषि प्रभृति पूर्ववत् हैं। युद्धकाल में इसका जप विजयप्रद है। इसके जप से व्याधि भी नष्ट होती है। जो पूर्वोक्त प्रकार से सविधि वायुपुत्र हनुमान की अर्चना करता है, उसे धन-धान्य, पुत्र-पौत्र, सौभाग्य तथा अतुल यश मिलता है। यह मेधा, विद्या, प्रभा, राज्य, विवाद में विजय, वश्य आदि कर्मों में तथा संग्राम में विजय लाभ करता है। अंजनागर्भोत्पन्न हनुमान के आराधक को इन सबकी प्राप्ति होती है।।१९८-२०२।।

।।७४वां अध्याय समाप्त।।

❖❖❖

अथ पञ्चसप्ततितमोऽध्यायः

हनुमान हेतु दीपदान का वर्णन

सनत्कुमार उवाच

अथ दीपविधिं वक्ष्ये सरहस्यं हनूमतः। यस्य विज्ञानमात्रेण सिद्धो भवति साधकः॥१॥
दीपपात्रप्रमाणं च तैलमानं क्रमेण तु। द्रव्यस्य च प्रमाणं वै तत्तु मानमनुक्रमात्॥२॥
स्थानभेदं च मन्त्रं च दीपदानमनुं पृथक्। पुष्पवासिततैलेन सर्वकामप्रदं मतम्॥३॥

देवर्षि सनत्कुमार कहते हैं—अब मैं हनुमान का दीप विधान उसके रहस्य के साथ कहता हूं। इसके जानने मात्र से साधक सिद्ध हो जाता है। स्थानभेदानुसार दीपदान का मन्त्र अलग-अलग होता है। दीपपात्र प्रमाण, तैल मान, क्रम, द्रव्यप्रमाण में अनुक्रम रहित कहूंगा। पुष्प की गन्ध से वासित तैल का दीपक सर्वकामप्रद माना गया है।।१-३।।

तिलतैलं श्रियः प्राप्त्यै पथिकागमनं प्रति। अतसीतैलमुद्दिष्टं वश्यकर्मणि निश्चितम्॥४॥
सार्षपं रोगनाशाय कथितं कर्मकोविदैः। मारणे राजिकोत्थं वा विभीतकसमुद्भवम्॥५॥

उच्चाटने करञ्जोत्थं विद्वेषे मधुवृक्षजम्। अलाभे सर्वतैलानां तिलजं तैलमुत्तमम्॥६॥

तिल तैल का दीपक श्रीप्रद है तथा इसे जलाने वाला पथिक सकुशल गृह लौट आता है। अतसी तैल के दीपक से वशीकरण कर्म निश्चित रूप से सफल होता है। करञ्ज का तैल उच्चाटनार्थ एवं विद्वेषण में महुआ का तैल प्रयोग करे। कर्मज्ञ लोगों ने सरसों का तैल रोग नाशार्थ कहा है। राई का तैल मारणार्थ उचित है। बहेड़ा का तेल भी मारण कर्म हेतु प्रयोग करे। जब कोई तैल न मिले, तब तिल तैल ही उत्तम है।।४-६।।

गोधूमाश्च तिला माषा मुद्गा वै तण्डुलाः क्रमात्।
पञ्चधान्यमिदं प्रोक्तं नित्यदीपं तु मारुतेः॥७॥

पञ्चधान्यसमुद्भूतं पिष्टमात्रं सुशोभनम्। सर्वकामप्रदं प्रोक्तं सर्वदा दीपदानके॥८॥

वश्ये तण्डुलपिष्टोत्थं मारणे मावपिष्टजम्। उच्चाटने कृष्णतिलपिष्टजं च प्रकीर्तितम्॥९॥

पथिकागमने प्रोक्तं गोधूमोत्थं सतण्डुलम्।
मोहने त्वाढकीजातं विद्वेषे च कुलत्थजम्॥१०॥
संग्रामे केवला माषाः प्रोक्ता दीपस्य पात्रके।
सन्धौ त्रिपिष्टजं लक्ष्मीहेतोः कस्तूरिकाभवम्॥११॥

एलालवङ्गकर्पूरमृगनाभिसमुद्भवम्। कन्याप्राप्त्यै तथा राजवश्ये सख्ये तथैव च॥१२॥

गेहूं, तिल, उर्द, मूंग तथा तण्डुल (चावल), इन पंचान्न का दीप हनुमान को नित्य दीपवत् दिया जाये। इन पंचान्न को पीसकर बनाया सुन्दर दीप सर्वकामनाप्रद है। यह दीप सदा दीपदानार्थ प्रशस्त मानते हैं। चावल पीसकर बनाया दीप वशीकरणार्थ, उर्द का मारणार्थ, काले तिल का उच्चाटनार्थ चावल गोधूम मिश्रण का दीप पथिक के वापस आने हेतु प्रशस्त है। अरहर का दीप मोहनार्थ, कुलत्थ का दीपक विद्वेषणार्थ, उर्द का संग्रामार्थ, त्रिष्टिप् का सन्धि कार्यार्थ, कस्तूरी का लक्ष्मी प्राप्त्यर्थ, इलायची-लौंग-कर्पूर मिश्रण का दीप कन्या लाभार्थ मित्रता हेतु एवं राजवशीकरणार्थ उपयोग करे।।७-१२।।

अलाभे सर्ववस्तूनां पञ्चधान्यं वरं स्मृतम्।
अष्टमुष्टिर्भवेत्किञ्चित्किञ्चिदष्टौ च पुष्कलम्॥१३॥
पुष्पकलानां चतुर्णां च ह्यढकः परिकीर्तितः।
चतुराढको भवेद्द्रोणः खारी द्रोणचतुष्टयम्॥१४॥

खरीचतुष्टयं प्रस्थसंज्ञा च परिकीर्तिता। अथवान्यप्रकारेण मानमत्र निगद्यते॥१५॥

पलद्वयं तु प्रसृतं द्विगुणं कुडवं मतम्। चतुर्भिः कुडवैः प्रस्थस्तैश्चतुर्भिस्तथाढकः॥१६॥

चतुराढको भवेद्द्रोणः खारी द्रोणचतुष्टयम्।
क्रमेणैतेन ते ज्ञेयाः पात्रे षट्कर्मसम्भवे॥१७॥

जब कोई वस्तु दीपक बनाने हेतु न मिले, तब पंचधान्य उत्तम है। आठ मुट्ठी अन्न की एक कुञ्च होती है। आठ कुञ्ची का एक पुष्कल, ४ पुष्कल का एक आढ़क, चार आढ़क का एक द्रोण, चार द्रोण का एक

खारी, चार खारी का एक प्रस्थ होगा। यहां अन्य मान भी स्वीकृत है। दो पल अर्थात् आठ रत्ती दो मासा का एक प्रसृत, २ प्रसृत का एक कुड़व, चार कुड़व का एक प्रस्थ, चार प्रस्थ का एक आढ़क, चार आढ़क का एक द्रोण तथा चार द्रोण की एक खारी मानी जाती है। षटकर्म हेतु ये ही पात्र मान हैं।।१३-१७।।

पञ्च सप्त नव तथा प्रमाणास्ते यथाक्रमम्।
सौगन्धे नैव मानं स्यात्तद्यथारुचि सम्मतम्॥१८॥
नित्यपात्रे तु तैलानां नियमो वार्तिकोद्भवः।
सोमवारे गृहीत्वा तद्धान्यं तोयप्लुतं धरेत्॥१९॥
पश्चात्प्रमाणतो ज्ञेयं कुमारीहस्तपेषणम्। तत्पिष्टं शुद्धपात्रे तु नदीतोयेन पिण्डितम्॥२०॥
दीपपात्रं ततः कुर्याच्छुद्धः प्रयतमानसः। दीपपात्रे ज्वाल्यमाने मारुतेः कवचं पठेत्॥२१॥
शुद्धभूमौ समास्थाप्य भौमे दीपं प्रदापयेत्।
मालामनूनां ये वर्णाः साध्यनामसमन्विताः॥२२॥
वर्तिकायां प्रकर्त्तव्यास्तन्तवस्तत्प्रमाणकाः।
तत्त्रिंशांशेन वा ग्राह्य गुरुकार्येऽखिलाढ्यता॥२३॥
कूटतुल्याः स्मृता नित्ये सामान्येऽथ विशेषके।
रुद्राः कूटगणाः प्रोक्ता न पात्रे नियमो मतः॥२४॥
एकविंशतिसंख्याकास्तन्तवोऽथाध्वनि स्मृताः।
रक्तसूत्रं हनुमतो दीपदाने प्रकीर्तितम्॥२५॥

५, ७, ९ ये क्रमिक रूप से दीपक के प्रमाण हैं। सुगन्धित तैल वाले दीपक का कोई मान नहीं है। यथारुचि उनका मान रखे। तेल के जो नित्य पात्र कहे जाते हैं, उनमें केवल बत्ती का ही विशेष नियम होता है। सोमवार को धान्य लाये। उसे जल में भिंगोये। तदनन्तर कुमारी कन्या उसे मात्रानुसार पीसे तदनन्तर शुद्ध पात्र में नदी के जल द्वारा उसे गूंथे। उसका दीप कुमारी ही पवित्रता से बनाये। इसे जलाकर हनुमत् कवच पढ़े। मंगल को पवित्र धरती पर दीपक स्थापित करके दान करे। साध्यनाम के साथ माला मन्त्र में जितने भी अक्षर हैं, उतने तन्तु दीपक की वर्त्तिका (बत्ती) में हों अथवा अक्षरों के तीस अंश के बराबर तन्तु हों। लेकिन जहां भारी काम करना हो, वहां तीसवां अंश नहीं पूरा तन्तु रखे अर्थात् साध्य नाम + मालामन्त्राक्षर मिलाकर उतने तन्तु भारी काम में रखे। नित्यपात्र में ११ तन्तु तथा विशेष पात्र में पूर्वकथित तन्तु हों। पात्र का (दीपक का) कोई माप नहीं कहा गया। मार्ग पर जो दीपक जलाये, उसकी बत्ती २१ तन्तु की हो। हनुमान का निवेदित दीपक की बत्ती लाल हो।।१८-२५।।

कृष्णमुच्चाटने द्वेषेऽरुणं मारणकर्मणि। कूटतुल्यपलं तैलं गुरुकार्ये शिवैर्गुणम्॥२६॥
नित्ये पञ्चपलं प्रोक्तमथवा मनासी रुचिः॥२७॥
हनुमत्प्रतिमायास्तु सन्निधौ दीपदापनम्। शिवालयेऽथवा कुर्यान्नित्यनैमित्तिके स्थले॥२८॥
विशेषोऽस्त्यत्र यः कश्चिन्मारुतेरुच्यते मया॥२९॥

उच्चाटन कर्म हेतु कृष्णवर्ण बत्ती, द्वेषकार्य हेतु मारण कार्य हेतु अरुणवर्ण की बत्ती बनाये। महत् कार्य सिद्ध्यर्थ ग्यारह पल प्रमाण से दीपक को तैल से भरें। नित्य दीप से पांच पल किंवा यथारुचि तैल छोड़े दीपदान हनुमत् मूर्त्ति के निकट हो। लेकिन शिवाला में नित्य नैमित्तिक स्थान में दीपदान कर सकते हैं। दीपदानार्थ जो विशेष बात है, वह कहता हूं।।२६-२९।।

प्रतिमाग्रे प्रमोदेन ग्रहभूतग्रहेषु च। चतुष्पथे तथा प्रोक्तं षट्सु दीपप्रदानम्॥३०॥

सन्निधौ स्फटिके लिङ्गे शालग्रामस्य सन्निधौ।

नानाभोगश्रियै प्रोक्तं दीपदानम् हनूमतः॥३१॥

गणेशसन्निधौ विघ्नमहासङ्कटनाशने। विषव्याधिभये घोरे हनुमत्सन्निधौ स्मृतम्॥३२॥

प्रतिमा के समक्ष प्रमोदपूर्वक दीपदान करने से भूत ग्रहादि शान्त होते हैं। चौराहे पर, स्फटिग लिंग के पास, शालग्राम के निकट ६ दीप प्रदान करे। हनुमान को दीपक प्रदान करने वाला नानाभोग तथा श्रीलाभ करता है। जो गणेश के सान्निध्य में दीप प्रदान करता है, उसे विघ्न तथा महान् संकट नष्ट हो जाते हैं। हनुमान के निकट दीपदान से घोर विष व्याधिभय प्रनष्ट होते हैं।।३०-३२।।

दुर्गायाः सन्निधौ प्रोक्तं संग्रामे दीपदापनम्। चतुष्पथे व्याधिनष्टौ दुष्टदृष्टौ तथैव च॥३३॥

राजद्वारे बन्धमुक्तौ कारागारेऽथवा मतम्। अश्वत्थवटमूले तु सर्वकार्यप्रसिद्धये॥३४॥

दुर्गा को दीपदान करने पर संग्राम में जयलाभ होता है। चौराहे पर दीपदान से व्याधि तथा दुष्ट दृष्टि नाश होता है। राजद्वार पर दीपदान से बन्धन तथा कारागार से मुक्ति, पीपल तथा वट के नीचे दीपदान द्वारा सर्वकार्य सिद्धि होती है।।३३-३४।।

वश्ये भये विवादे च वेश्मसंग्रामसङ्कटे। द्यूते दृष्टिस्तम्भने च विद्वेषे मारणे तथा॥३५॥

मृतकोत्थापने चैव प्रतिमाचालने तथा। विषे व्याधौ ज्वरे भूतग्रहे कृत्याविमोचने॥३६॥

क्षतग्रन्थौ महारण्ये दुर्गे व्याघ्रे च दन्तिनि। क्रूरसत्त्वेषु सर्वेषु शश्वद्बन्धविमोक्षणे॥३७॥

पथिकागमने चैव दुःस्थाने राजमोहने। आगमे निर्गमे चैव राजद्वारे प्रकीर्तितम्॥३८॥

दीपदानं हनुमतो नात्र कार्या विचारणा॥३९॥

रुद्रैकविंशपिण्डांश्च त्रिधा मण्डलमानकम्।

लघुमानं स्मृतं पञ्च सप्त वा नव वा तथा॥४०॥

वशीकरण, भय, विवाद, गृहसंकट, संग्रामसंकट, द्यूत, दृष्टि स्तम्भन, विद्वेष, मारण, मृतकोत्थापन, प्रतिमा का चलना, विष-व्याधि-ज्वर-भूतग्रह तथा कृत्य। मोचन, विस्फोटक, महारण्य, दुर्गम स्थान, व्याघ्र, हस्ति तथा भयानक जन्तुभय, बन्धनमोचन, घर से गया पथिक जल्द आये, दुष्ट स्थान में, राजा को मोहित करने में, राजद्वार में प्रवेश तथा वापस लौटने आदि सभी कार्य में हनुमान को दीपदान करने वाला सफलता पाता है। इसमें अन्यथा विचार न करे। एकादश, २१ पिण्ड त्रिधामण्डलमान होते हैं। ५, ७, ९ लघुमान हैं।।३५-४०।।

क्षीरेण नवनीतेन दध्ना वा गोमयेन च। प्रतिमाकरणं प्रोक्तं मारुतेर्दीपदापने॥४१॥

दक्षिणाभिमुखं वीरं कृत्वा केसरिविक्रमम्॥४२॥
ऋक्षविन्यस्तपादं च किरीटेन विराजितम्।
लिखेद्भित्तौ पटे वापि पीठे वा मारुतेः शुभे॥४३॥
मालामन्त्रेण दातव्यं दीपदानं हनूमतः। नित्यदीपः प्रकर्त्तव्यो द्वादशाक्षरविद्यया॥४४॥

दीपदान काल में दुग्ध, मक्खन किंवा दधि अथवा गोमय से हनुमत् प्रतिमा बनाये। दीवार पर, वस्त्र पर किंवा पीठ पर वायुनन्दन का जो चित्र बनाया जाये, उसमें वे वीर तथा सिंह के समान केसरीविक्रम लगें। उनका चरण ऋक्ष पर्वत पर हो। मस्तक मुकुटमण्डित हो। इनको दीपदान मालामन्त्र से करना चाहिये तथापि नित्य दीप तो द्वादशाक्षर मन्त्र से प्रदान हो।।४१-४४।।

विशेषस्तत्र यस्तं वै दीपदानेऽवधारय। षष्ठ्यादौ च द्वितीयादाविमं दीपमितीरयेत्॥४५॥
गृहाणेति पदं पश्चाच्छेषं पूर्ववदुच्चरेत्। कूटादौ नित्यदीपे च मन्त्रं सूर्याक्षरं वदेत्॥४६॥
तत्र मालाख्यमनुना तत्तत्कार्येषु कारयेत्। गोमयेनोपलिप्तायां भूमौ तद्गतमानसः॥४७॥
षट्कोणं वसुपत्रं च भूमौ रेखासमन्वितम्।
कमलं च लिखेद्भद्रं तत्र दीपं निधापयेत्॥४८॥
शैवे वा वैष्णवे पीठे पूजयेदञ्जनासुतम्।
कूटषट्कं च षट्कोणे अन्तराले परं लिखेत्॥४९॥

अब दीपदान के सम्बन्ध में जो विशेष नियमादि है, उसे श्रवण करिये। षष्टी अथवा द्वितीया प्रभृति तिथियों पर हनुमान (इष्टदेव) से यह कहे—"यह दीपदान स्वीकार कीजिये।" तदनन्तर बाकी कार्य पूर्व की तरह ही करना होगा। कूटदीप अर्थात् राजमहल के द्वार पर आदि स्थानों पर और नित्यदीप दानार्थ द्वादशाक्षर मन्त्र पढ़ना चाहिये, जो पूर्व में कहा है। अन्य दीप दानार्थ मालामन्त्र पढ़ना होगा। गोमय लिप्त भूमि पर एकाग्रता के साथ षट्कोणांकन करे। उससे बाह्य स्थान में अष्टकोण कमल बनाकर उसके बाहर भूपुर रेखांकन करे। वहां कमल में दीपक रखे। तत्पश्चात् शैवपीठ में किंवा वैष्णव पीठ में अंजनीपुत्र हनुमान् की पूजा करनी चाहिये। षट्कोण के अन्तराल में षट्कूट लिखे। यह षट्कूट है—हौं ह्स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं।।४५-४९।।

षट्कोणेषु षडङ्गानि बीजयुक्तानि संलिखेत्।
सौम्यं मध्यगतं लेख्यं तत्र सम्पूज्य मारुतिम्॥५०॥
षट्कोणेषु षडङ्गानि नामानि च पुरोक्तवत्।
वसुपत्रे क्रमात्पूज्या अष्टावेते च वानराः॥५१॥
सुग्रीवायाङ्गदायाथ सुषेणाय नलाय च। नीलायाथो जाम्बवते प्रहस्ताय तथैव च॥५२॥
सुवेषाय ततः पश्चाद्यजेत्षडङ्गदेवताः। आदावञ्जनापुत्राय ततश्च रुद्रमूर्तये॥५३॥
ततो वायुसुतायाथ जानकीजीवनाय च। रामदूताय ब्रह्मास्त्रनिवारणाय तत्परम्॥५४॥
पञ्चोपचारैः सम्पूज्य देशकालौ च कीर्तयेत्। कुशोदकं समादाय दीपमन्त्रं समुच्चरेत्॥५५॥

अब षट्कोणों में षडङ्ग का नाम आदि (बीजयुक्त नाम) लिखकर मध्य में चन्द्रमन्त्र लिखने के उपरान्त वहां वायुपुत्र हनुमान् का पूजन करके षट्कोण में षडङ्ग देवतागण का नाम बीजयुक्त पूर्णेक्तरूपेण अंकित करे। तत्पश्चात् अष्टदल के दलों पर सुग्रीव, अंगद, सुषेण, नल, नील, जाम्बवन्त, प्रहस्त तथा सुवेश वानर की पूजा क्रमानुसार करे। सबसे पहले अंजनीसुत नाम से पूजा करने के उपरान्त रुद्रमूर्त्ति, वायुसुत, जानकी जीवन, रामदूत, ब्रह्मास्त्रनिवारक नामों की पूजा पंचोपचार से कहे। तब उस देश एवं काल के नाम का उच्चारण करके कुश-जल ग्रहण करे तथा दीपमन्त्र का उच्चारण करे।।५०-५५।।

उत्तराभिमुखो जप्त्वा साधयेत्साधकोत्तमः।
तं मन्त्रं कूटधा जप्त्वा जलं भूमौ विनिक्षिपेत्॥५६॥

ततः करपुटं कृत्वा यथाशक्ति जपेन्मनुम्। अनेन दीपवर्येण उदङ्मुखगतेन वै॥५७॥
तथा विधेहि हनुमन्यथा स्युर्मे मनोरथाः। त्रयोदशैवं द्रव्याणि गोमयं मृत्तिका मसी॥५८॥
अलक्तं दरदं रक्तचन्दनं चन्दनं मधु। कस्तूरिका दधि क्षीरं नवनीतं घृतं तथा॥५९॥
गोमयं द्विविधं तत्र प्रोक्तं गोमहिषीभवम्। पश्चाद्विनष्टद्रव्याप्तौ माहिषं गोमयं स्मृतम्॥६०॥
पथिकागमने दूरान्महादुर्गस्य रक्षणे। बालादिरक्षणे चैव चौरादिभयनाशने॥६१॥

स्त्रीवश्यादिषु कार्येषु शस्तं गोगोमयं मुने।
भूमिस्पृष्टं न तद्ग्राह्यमन्तरिक्षाच्च भाजने॥६२॥

साधकोत्तम को चाहिये कि वह उत्तर मुखी होकर मन्त्र की पांच आवृत्ति करके भूमि पर जल निःक्षेप करे। अब बद्धाञ्जलि (हाथ जोड़कर) यथाशक्ति मन्त्र जपकर यह निवेदन करे—"हे प्रभु हनुमान्! इस उत्तरमुख उत्तम दीपदान द्वारा मेरे मनोरथ पूर्ण करिये।" अब अन्य विधान कहते हैं। साधक गोबर, मृत्तिका, स्याही, आलता, खस, लालचन्दन, श्वेतचन्दन, मधु, कस्तूरी, दही, दुग्ध, मक्खन, घृत लाये। गोबर गौ-महिष दो प्रकार का होता है (यहां गौ का ही गोबर ग्रहण करे)। खोई भई वस्तु द्रव्यादि की पुनः प्राप्ति हेतु महिष का गोबर उपयोग करे। दूर देश गया पथिक लौट आये, दुर्ग रक्षार्थ, बालक आदि के रक्षार्थ, चौरादि भयनाश, स्त्रीवशीकरण कार्य हेतु गौ का गोबर प्रशस्त है। हे मुनिवर! गोबर जब गाय कर रही हो, उसे पृथिवी पर गिरने के पूर्व ही ग्रहण करे। वह गोबर भूमि पर न गिरे। बीच में ही उसे ग्रहण कर लिया जाये।।५६-६२।।

चतुर्विधा मृत्तिका तु श्वेता पीतारुणासिता। तत्र गोपीचन्दनं तु हरितालं च गैरिकम्॥६३॥

मषी लाक्षारसोद्भूता सर्वं वान्यत्स्फुटं मतम्।
कृत्वा गोपीचन्दनेन चतुरस्त्रं गृहं सुधीः॥६४॥
तन्मध्ये माहिषेणाथ कुर्यान्मूर्तिं हनूमतः।
बीजं क्रोधाच्च तत्पुच्छं लिखेन्मन्त्री समाहितः॥६५॥

तैलेन स्नापयन्नमूर्तिं गुडेन तिलकं चरेत्। शतपत्रसमो धूपः शालनिर्यासम्भवः॥६६॥

मृत्तिका चतुर्विध कही गयी है। यथा—उज्वल, पीत, लाल तथा काली। गोपीचन्दन, हरिताल तथा गेरु मिट्टी को सर्वोत्तम मानते हैं। स्याही लाक्षारस से बनी हो। अन्य वस्तु तो स्पष्टतः कही गयी हैं। सुधी साधक

गोपीचन्दन से चतुरस्र मण्डल बनाये। मध्य में (भैंस) महिषी के गोबर से हनुमद् प्रतिमा बनाये। सावधानी पूर्वक क्रोध बीज 'हं' से हनुमान की पूंछ बनाये। मूर्त्ति को तैल स्नान कराये तथा गुड़ का तिलक लगाना चाहिये। उस समय कमलवत् सुगन्धित शालवृक्ष का धूप हनुमान को अर्पित करे।।६३-६६।।

कुर्याच्च तैलदीपं तु वर्तिपञ्चकसंयुतम्। दध्योदनेन नैवेद्यं दद्यात्साधकसत्तमः।।६७।।
वारत्रयं कण्ठदेशे सशेषविषमुच्चरन्। एवं कृते तु नष्टानां महिषीणां गवामपि।।६८।।
दासीदासादिकानां च नष्टानां प्राप्तिरीरिता। चौरादिदुष्टसत्त्वानां सर्पादीनां भये पुनः।।६९।।
तालेन च चतुर्द्वारं गृहं कृत्वा सुशोभनम्। पूर्वद्वारे गजः स्थाप्यो दक्षिणे महिषस्तथा।।७०।।
सर्पस्तु पश्चिम द्वारे व्याघ्रश्चैवोत्तरे तथा। एवं क्रमेण खड्गं च क्षुरिकादण्डमुद्गरान्।।७१।।

वहां साधकसत्तम पांच बत्तियों वाला तैलदीप जलाये तथा दही-भात का नैवेद्य अर्पित करे। वहां तीन बार शेष (आ) युक्त विष (म्) का उच्चारण करे अर्थात् 'मा मा मा' कहे। जो इस अनुष्ठान को करता है, उसकी खो गई महिष, गौ, दासी, दास पुनः प्राप्त होते हैं। चोर, दुष्ट आदि के सर्प के भय को दूर करने हेतु हरिताल से चतुर्द्वार सुन्दर गृह बनाये। पूर्वद्वार पर हाथी, दक्षिण द्वार पर महिष, पश्चिम द्वार पर सर्प, उत्तर द्वार पर व्याघ्र की प्रतिमा लगाये। इसी क्रम से पूर्व द्वार पर खड्ग, दक्षिण द्वार पर छुरी, पश्चिम द्वार पर दण्ड तथा उत्तर द्वार पर मुद्गर का चित्र बनाये।।६७-७१।।

विलिख्य मध्ये मूर्ति च महिषीगोमयेन वै।
कृत्वा डमरुहस्तां च चकिताक्षीं प्रयत्नतः।।७२।।
पयसा स्नपनं रक्तचन्दनेनानुलेपनम्। जातीपुष्पैस्तु सम्पूज्य शुद्धधूपं प्रकल्पयेत्।।७३।।
घृतेन दीपं दत्त्वाथ पायसान्नं निवेदयेत्। गगनं दीपिकेन्द्वाढ्यं शास्त्रं च पुरतो जपेत्।।७४।।
एव सप्तदिनं कृत्वा मुच्यते महतो भयात्। अनयोर्भौमवारे तु कुर्यादारम्भमादरात्।।७५।।
शत्रुसेनाभये प्राप्ते गौरिकेण तु मण्डलम्। कृत्वा तदन्तरे तालमीषन्नम्रं समालिखेत्।।७६।।
तत्रावलम्बमानां च प्रतिमां गोमयेन तु। वामहस्तेन तालाग्रं दक्षिणे ज्ञानमुद्रिका।।७७।।
तालमूलात्स्वकाष्ठायां मार्गे हस्तिमिते गृहम्।
चतुरस्त्रं विधायाथ तन्मध्ये मूर्तिमालिखेत्।।७८।।

तदनन्तर मध्य में भैंस के गोबर की मूर्त्ति बनाये। उसके हाथ में डमरू हो। नेत्र चकित जैसे हों। मूर्त्ति को दुग्ध से स्नान कराकर रक्त चन्दन लिप्त करे। जाती पुष्प से उसकी पूजा करके वहां शुद्ध धूप, घृत दीप, पायस नैवेद्य, निवेदित करे। आकाश (ह) दीपिका (ऊ) तथा इन्दु (अनुस्वार) शस्त्र (फट्) यहां मन्त्रोद्धार है "हूं फट्" यह देवता के सम्मुख जप करे। सात दिन यह अनुष्ठान करने से महाभय नाश हो जाता है। उभय कार्य सिद्धि हेतु मंगल को सादर पूजन सम्पन्न करे। जब शत्रुसैन्य का भय हो, तब गेरु से मण्डल निर्माण करके उसके अन्दर ही तनिक नत एक ताल वृक्ष बनाकर उसी वृक्ष से लटकती गोमय प्रतिमा बनाये। (चित्र बनाये) उस प्रतिमा के वामहस्त में तालवृक्ष का अग्रभाग हो, दाहिने में ज्ञानमुद्रा हो। तालवृक्ष से एक हाथ के अन्तर पर अपनी ओर एक चतुष्कोण गृह निर्माण करे। मध्य में उत्तम प्रतिमा बनाये।।७२-७८।।

दक्षिणाभिमुखीं रम्यां हृदये विहिताञ्जलिम्।
तोयेन स्नानगन्धादि यथासम्भवमर्पयेत्॥७९॥
कृशरान्नं च नैवेद्यं साज्यं तस्यै निवेदयेत्। किलिद्वयं जपं प्रोक्तमेवं कुर्याद्दिने दिने॥८०॥
एवं कृते भवेच्छीघ्रं पथिकानां समागमः।
श्यामपाषाणखण्डेन लिखित्वा भूपतेर्गृहम्॥८१॥

उस प्रतिमा का मुख दक्षिणाभिमुखी हो। हाथ की अंजलि हृदय पर बद्ध हो। उसे जल से स्नान कराये तथा यथासंभव गन्धादि अर्पित करे। उसे खिचड़ी, घी, खीर प्रभृति का नैवेद्य अर्पित करे। तदनन्त किलि-किलि का जप नित्य करे। जो ऐसी अर्चना करता है, उसका घर से गया हुआ पथिक व्यक्ति शीघ्र वापस आ जाता है। काले पत्थर के खण्ड से राजगृह बनाये।।७९-८१।।

प्राकारं तु चतुर्द्वारयुक्तं द्वारेषु तत्र वै। अन्योन्यपुच्छपरिधित्रययुक्तां हनूमतः॥८२॥
कुर्यान्मूर्तिं गोमयेन धत्तूरकुसुमैर्यजेत्। जठामांसीभवं धूपं तैलाक्तघृतदीपिकम्॥८३॥
नैवेद्यं तिलतैलाक्तसक्षारा माषरोटिका। ध्येयो दक्षिणहस्तेन रोटिकां भक्षयन्हरिः॥८४॥
वामहस्तेन पाषाणैस्त्रासयन्परसैनिकान्।
मारयन्भ्रुकुटीं बद्ध्वा भीषयन्मथयन्स्थितः॥८५॥

चतुर्दिक् प्राकार निर्माण करे। उसमें चारों ओर एक-एक द्वार बनाये। तीन द्वार पर मण्डलाकृति हनुमत् पुच्छवत् रेखा बनाकर चतुर्थ द्वार पर गोमय से हनुमत् मूर्त्ति निर्माण करे। उसे धतूरे के पुष्प से पूजित करके, जटामासी के रस से धूप प्रदान करे। तैल मिश्रित घृत दीपक जलाये। उर्द की लवणयुक्त रोटी तिल तैल में पकाकर अर्पित करे। तब हनुमान का ध्यान करे—"हनुमान दाहिने हाथ से रोटी खा रहे हैं। बाम हाथ से पत्थर फेंक कर शत्रुओं पर प्रहार कर रहे हैं। क्रोध से उनकी भ्रुकुटी वक्र हो गयी है। वे शत्रुओं को भयभीत करते उनको मथित कर रहे हैं।"।।८२-८५।।

जपेच्च भुग्भुगिति वै सहस्रं ध्यानतत्परः। एवं कृतविधानेन परसैन्यं विनाशयेत्॥८६॥
रक्षा भवति दुर्गाणां सत्यं सत्यं न संशयः। प्रयोगा बहवस्तत्र संक्षेपाद्गदिता मया॥८७॥

तब ध्यानस्थ होकर एक हजार बार भुक्-भुक् का जप करे। इससे शत्रु सैन्य विनाश तथा दुर्गरक्षण होता है। यह निःसंदिग्ध तथा सत्य प्रयोग है। मैंने संक्षेप में नाना प्रयोगों को कह दिया है।।८६-८७।।

प्रत्यहं यो विधानेन दीपदानं हनूमतः। तस्यासाध्यं न वै किञ्चिद्विद्यते भुवनत्रये॥८८॥
न देयं दुष्टहृदये दुष्टचिन्तनबुद्धये। अविनीताय शिष्याय पिशुनाय कदाचन॥८९॥
कृतघ्नाय न दातव्यं दातव्यं च परीक्षिते। बहुना किमिहोक्तेन सर्वं दद्यात्कपीश्वरः॥९०॥

जो व्यक्ति सविधि नित्य हनुमान को दीपदान करता है, उसके लिये तीनों लोकों में कुछ भी असाध्य नहीं रह जाता। इसे दुष्ट चिन्तनरत, दुष्ट हृदय, अविनीतशिष्य, चुगलखोर को कदापि न बतलाये। कृतघ्न को भी नहीं देना चाहिये। सम्यक् परीक्षा करके ही देना चाहिये। अब अधिक क्या कहा जाये! दीपदान करने वाले को कपीश्वर सब कुछ प्रदान कर देते हैं।।८८-९०।।

अथ मन्त्रान्तरं वक्ष्ये तत्त्वज्ञानप्रदायकम्। तारो नमो हनुमते जाठरत्रयमीरयेत्॥९१॥
दनक्षोभं समाभाष्य संहरद्वयमीरयेत्। आत्मतत्त्वं ततः पश्चात्प्रकाशययुगं ततः॥९२॥

वर्मास्त्रवह्निजायान्तः सार्द्धषड्विंशदर्णवान्।
वसिष्ठोऽस्य मुनिश्छन्दोऽनुष्टुप् च देवताः पुनः॥९३॥
हनुमान्मुनिसप्तर्तुवेदाष्टनिगमैः क्रमात्।
मन्त्रार्णैश्च षडङ्गानि कृत्वा ध्यायेत्कपीश्वरम्॥९४॥

जानुस्थवामबाहुं च ज्ञानमुद्रापरं हृदि। अध्यात्मचित्तमासीनं कदलीवनमध्यगम्॥९५॥

बालार्ककोटिप्रतिमं ध्यायेज्ज्ञानप्रदं हरिम्।
ध्यात्वैवं प्रजपेल्लक्षं दशांशं जुहुयात्तिलैः॥९६॥

अब तत्वज्ञानप्रद अन्य मन्त्र कहता हूं। यह मन्त्र है पहले तार (ॐ) नमो हनुमते कहने के अनन्तर तीन बार 'म' का उच्चारण करके 'दनक्षोभम्' कहे। ''ॐ नमो हनुमते मम मदन क्षोभम्'' तत्पश्चात् 'संहर-संहर' कह कर 'आत्मतत्वं प्रकाशय-प्रकाशय' कहे। तदनन्तर वर्म (हुं) अस्त्र (फट्) तथा वह्निजाया (स्वाहा) कहे। मन्त्रोद्धार है—ॐ नमो हनुमते मम मदनक्षोभं संहर संहर आत्मतत्वं प्रकाशय-प्रकाशय हुं फट् स्वाहा'' का उच्चारण करे। इस मन्त्र के ऋषि हैं वसिष्ठ। छन्दः है अनुष्टुप्, देवता हैं हनुमान्। ७, ७, ६, ४, ८, ४ मन्त्राक्षर से षडङ्गन्यास करे। तदनन्तर हनुमान का ध्यान करे। यथा—वे पवनपुत्र आजानुबाहु हैं। उनके हाथ में ज्ञानमुद्रा शोभित है। वे सदा अध्यात्मचिन्तन निरत रहा करते हैं। वे कदली वन में विचरते हैं। उनकी कान्ति कोटि बाल सूर्यवत् है। ऐसे ज्ञानप्रद हरि (वानर) का ध्यान करे। ध्यानोपरान्त एकलक्ष जप करके दस हजार होम तिल से करना चाहिये।।९१-९६।।

साज्यैः सम्पूज्येत्पीठे पूर्वोक्ते पूर्ववत्प्रभुम्।
जप्तोऽयं मदनक्षोभं नाशयत्येव निश्चितम्॥९७॥

तत्त्वज्ञानमवाप्नोति कपीन्द्रस्य प्रसादतः। अथ मन्त्रान्तरं वक्ष्ये भूतविद्रावणं परम्॥९८॥
तारः काशींकुक्षिपरवराहश्चाञ्जनापदम्। पवनो वनपुत्रान्ते आवेशिद्वयमीरयेत्॥९९॥

इस होम में तिल से घृत भी मिश्रित करे। होम के उपरान्त पीठ पर पूजा पूर्ववत् (हनुमान पूजा) करे। इस मन्त्र का जप करने से साधक में कामजनित क्षोभ अवश्य नष्ट हो जाता है। उसे कपीन्द्र की कृपा से तत्वज्ञान लाभ होता है। अब मैं परम भूतों को भगाने वाला मन्त्र कहता हूं।।९७-९९।।

तारः श्रीहनुमत्पश्चादस्त्रचरभुजाक्षरः। ब्रह्मा मुनिः स्याद्गायत्री छन्दोऽत्र देवता पुनः॥१००॥

हनुमान्कमला बीजं फट् शक्तिः परिकीर्तितः।
षडदीर्घाढ्येन बीजेन षडङ्गानि समाचरेत्॥१०१॥
आञ्जनेयं पाटलास्यं स्वर्णाद्रिसमविग्रहम्।
पारिजातद्रुममूलस्थं चिन्तयेत्साधकोत्तमः॥१०२॥

एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षं दशांशं जुहुयात्तिलैः।
त्रिमध्वक्तैर्यजेत्पीठे पूर्वोक्ते पूर्ववत्सुधीः॥१०३॥

यह मन्त्र है ॐ श्रीं महाञ्जनाय पवनपुत्रावेशयावेशय ॐ श्री हनुमते फट्। यह पच्चीस अक्षरात्मक मन्त्र है (यहां दो प्रणव हैं, उसकी गिनती १ ही होगी)। इस मन्त्र के ऋषि हैं ब्रह्मा। छन्दः है गायत्री। देवता हैं हनुमान्। बीज है श्रीं, शक्ति है फट्। षड्दीर्घ युक्त बीज मन्त्र द्वारा षडङ्गन्यासोपरान्त तनिक रक्तमुख स्वर्ण पर्वतवत् देह वाले पारिजात वृक्ष के नीचे विराजमान हनुमत् ध्यान करके इस मन्त्र का एक लक्ष जप तथा दस हजार होम करके त्रिमधुरान्वित तिल का होम करे। अब पूर्वकथित पीठ पर सुधी साधक पूर्ववत् पूजनादि सम्पन्न करे।।१००-१०३।।

अनेन मनुना मन्त्री ग्रहग्रस्तं प्रमार्जयेत्।
आक्रन्दंस्तं विमुच्याथ ग्रहः शीघ्रं पलायते॥१०४॥
मनवोऽमी सदा गोप्या न प्रकाश्या यतस्ततः।
परीक्षिताय शिष्याय देया वा निजसूनवे॥१०५॥
हनुमद्भजनासक्तः कार्तवीर्यार्जुनं सुधीः।
विशेषतः समाराध्य यथोक्तं फलमाप्नुयात्॥१०६॥

इति श्रीबृहन्नारदीयपुराणे पूर्वभागे बृहदुपाख्याने तृतीयपादे दीपविधिनिरूपणं नाम पञ्चसप्ततितमोऽध्यायः।।७५।।

इस मन्त्र द्वारा ग्रह से पकड़े व्यक्ति का मार्जन करने पर ग्रह रुदन करते उस व्यक्ति को मुक्त करके पलायन कर जाते हैं। यह मन्त्र अतीव गुप्त है। इसे यहां-वहां प्रकट न करे। अच्छी तरह परीक्षित शिष्य तथा स्वपुत्र को ही यह मन्त्र प्रदान करे। हनुमान की भक्ति से आसक्त सुधीजन कार्तिवीर्य अर्जुन की आराधना करके विशेष फल लाभ करे।।१०४-१०६।।

।।७५वां अध्याय समाप्त।।

❖❖❖
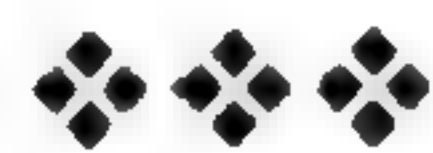
अथ षट्सप्ततितमोऽध्यायः

कार्त्तवीर्य महिमा

नारद उवाच

कार्तवीर्यप्रभृतयो नृपा बहुविधा भुवि। जायन्तेऽथ प्रलीयन्ते स्वस्वकर्मानुसारतः॥१॥
तत्कथं राजवर्योऽसौ लोके सेव्यत्वमागतः। समुल्लंघ्य नृपानन्यानेतन्मे नुद संशयम्॥२॥